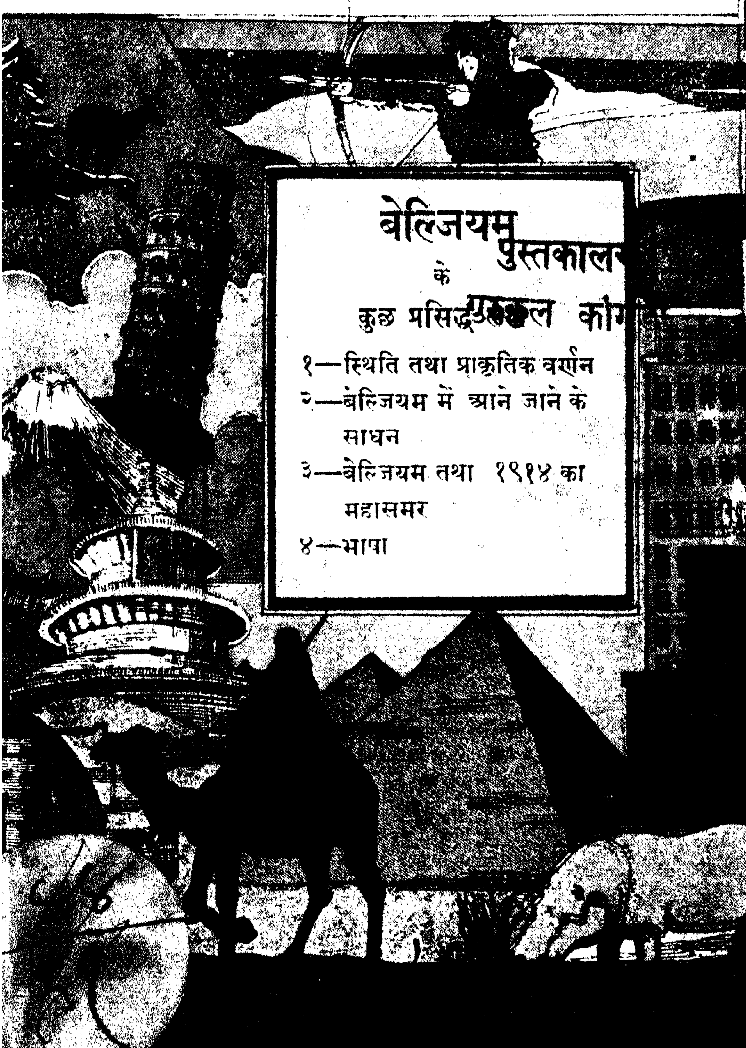
देश दर्शन

बेल्जियम



बेल्जियम पुस्तकाल

के

कुछ प्रसिद्ध ... कोग

अप्रैल १९४०] # देश-दर्शन [चैत्र १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या ११] ## बेल्जियम [वर्ष १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-	
Foreign	Rs. 6/-	
Single copy	As. -/6-	

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
एक प्रति	।=)

विषय-सूची

स्थान

स्थिति तथा प्राकृतिक वर्णन

टेम्स नदी अथवा डोवर को छोड़ने के पश्चात् इँगलिश चैनल में यात्रा करने से हम लगभग तीन चार घंटे के बाद ही उत्तरी सागर को पहुंच जाते हैं। वहां पहुँचने पर हमें पीले बालू का एक बड़ा मैदान दिखाई पड़ता है। इस मैदान के पीछे बालू की निचली पहाड़ियां हैं। इन बालू की पहाड़ियों को ड्यून्स कहते हैं। इस मैदान में तटों पर कहीं कहीं नगर बसे हुये हैं, यह नगर एक दूसरे से बिलकुल अलग हैं।

इस प्रकार हमको बेल्जियम देश का प्रथम दृश्य इँगलैन्ड से यात्रा करने पर मिलता है। बेल्जियम के पूर्व में हालैंड और पश्चिम में फ्राँस देश है।

इस बलुहे पीले मैदान में न तो पहाड़ हैं न चट्टानें और न वृक्ष ही दिखाई पड़ते हैं। चारों ओर केवल बालू ही बालू दिखाई पड़ता है। शीत काल में यहाँ विकराल हवा चलती है, जिसके कारण समुद्री लहरें बड़े वेग से किनारे पर टक्कर खाती हैं और चारों ओर बालू उड़ने लगती है। प्रचण्ड वायु के उड़ने से शीत की अधिकता हो जाती है। तूफान आ जाता है,

चारों ओर धुँधलापन छा जाता है और बादल उमड़ आते हैं। कहीं कहीं भयानक ओले गिरते हैं।

ग्रीष्म काल में यह सारा दृश्य बदल जाता है। उस समय हवा सुहावनी चलती है। समुद्र की लहरें धीरे धीरे आकर तटों से टकराती हैं। आकाश नीले रंग का साफ हो जाता है। बालू गरम हो जाती है। संसार में सबसे अधिक अनुकूल स्थान किला बनाने के लिये यहीं पर है। यहां की भूमि न तो चट्टानदार है और न तो फिसलती है इसलिये ग्रीष्म काल में यहां लड़के बड़ी स्वतंत्रता के साथ खेलते हैं। यही कारण है जो इँगलैन्ड बेल्जियम, फ्रांस और दूसरे देश के लोग यहां अपनी गरमी की छुट्टियाँ बिताने के लिये आते हैं।

प्राचीन काल में शीत काल के तूफान के कारण समुद्र की लहरें इतनी तीव्र थीं कि बेल्जियम में बाढ़ आ जाती थी। इसलिये लोगों ने किनारे पर बांध बनाना आरम्भ किया। पहले मिट्टी के बांध बनाये जाते थे, किन्तु अब ईंट तथा पत्थर के बनाये जाते हैं। आशा की जाती है कि कुछ समय में बेल्जियम का सारा तट बाँधों से बँध जावेगा। इन बांधों को बेल्जियम में डिगवे कहते हैं।

इन बांधों को बनाने के लिये पहले हरी टहनियों की मोटी नींव बनाई जाती है, फिर उसमें लकड़ी के लट्ठे ऊपर से गाड़े जाते हैं जो बालू के भीतर दूर तक गड़े रहते हैं। बांध ईंट पत्थर के बनाये जाते हैं, सीमेंट से उनकी जुड़ाई होती है और उनकी कसाई लोहे के छड़ों से की जाती है।

आस्टेण्ड से पश्चिम को जाने वाला बांध सबसे बड़ा तथा सुन्दर है। यह साइकिल चलाने के लिये बहुत अच्छा स्थान है किन्तु मोटर चलाने की आज्ञा नहीं है।

तटीय नगरों में अपने अपने बांध अलग अलग हैं। इन बाँधों पर विनोद गृह तथा होटल बने हैं। बांधों के नीचे भी बहुत से विनोद गृह बने होते हैं। ये बड़े सुन्दर बने होते हैं। इनकी छतें लाल खपड़ैलों की बनती हैं और सामने बरामदा होता है। इनमें सुन्दर लकड़ी के काम बने होते हैं। जो चमकीले रंगों से पुते रहते हैं।

गर्मी के दिनों में इन बांधों पर दिन भर लोगों की भीड़ लगी रहती है। खेलने, नहाने, धूप सेवन करने वाले लोगों की भीड़ रहती है। लोग छोटे छोटे किले

बनाया करते हैं। जिसका किला सर्वोत्तम होता है उसे इनाम दिया जाता है।

सवेरे ६ बजे से संध्या ६ बजे तक स्नान करने वालों की भीड़ जमा रहती है तो भी नहाने वालों को कमी नहीं होती। समुद्र के अन्दर कुछ गहराई में एक बोट पर दो आदमी लाल कमीज़ पहने बैठे रहते हैं। यह लोग अपने पास रस्सी तथा लाइफ वेल्ट रखते हैं। यह लोग इस बात की चौकीदारी करते हैं कि कोई आदमी पानी में डूब न जाय। कभी कभी यह लोग पानी के बाहर बालू पर खड़े रहते हैं। और जब कोई नहाने वाला पानी के अन्दर तैरता हुआ दूर तक जाता दिखाई पड़ता है तो उसे बाजा बजा कर लौट आने का संकेत करते हैं।

संध्या के समय जब चिराग जल जाते हैं तो इन बांधों के ऊपर नाच गाने होते हैं। जिसमें विदेशी लोग भी भाग लेते हैं। गरमी की छुट्टियों के समाप्त होने पर लोग अपने स्थानों को वापस चले जाते हैं। होटल तथा विनोद गृह बन्द हो जाते हैं और बाँध बिलकुल सुनसान हो जाते हैं।



फ्लेमिश का मैदान

बांधों पर चढ़ कर यदि हम देखें तो हमें फ़लैन्डर्स का बड़ा मैदान दिखाई पड़ता है। यह मैदान बड़ा और चौरस है। इसमें बड़ी बड़ी सड़कें हैं जो पत्थरों की बनी हुई हैं। सड़कों पर चिनार के पेड़ों की कतारें लगी हुई हैं। ये पेड़ पछुआ हवा के कारण पूर्व की ओर झुके हुये हैं। मैदान के बीच में कहीं कहीं जंगल, बाग और छोटी छोटी नदियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। इस बड़े मैदान में बड़े बड़े सुन्दर खेत हैं। जिनमें गेहूँ, राई, आलू और शलजम की उपज की जाती है। घास के मैदान भी कहीं कहीं पाये जाते हैं जिसमें पशु तथा भेड़ें चराई जाती हैं सारे फ़लेमिश मैदान में फार्म-घर तथा झोपड़े बने हुये दिखाई पड़ते हैं। मैदान में प्राचीन नगर तथा बड़े बड़े गांव भी बड़ी संख्या में पाए जाते हैं।

इस बड़े मैदान के कुछ गाँव दर्शनीय हैं। काक्साइड नामक गाँव बलुही पहाड़ियों के बीच में बसा है। यह गाँव समुद्र से अधिक दूर नहीं है। इस गाँव के निवासी अपना जीवन मछली के शिकार पर ही व्यतीत करते हैं इसके मछली मारने का तरीका बड़ा अद्भुत है। यह

लोग घोड़े पर चढ़ कर मछली का शिकार करते हैं। यह लोग छोटे छोटे घोड़ों पर चढ़कर टोकरियाँ लेकर लम्बे लट्ठों में जाल बाँध कर समुद्र में जाते हैं और वहाँ मछली तथा धींगों का शिकार करते हैं।

कुछ ही दूर अन्दर की ओर एक दूसरा गाँव है, चर्च के अन्दर मेरी की मूर्ति है। इस चर्च के अन्दर जहाज के खिलौने टँगे हैं। यह चीजें "मेरी" को भेंट चढ़ाई गई हैं। जब कोई जहाज खेने वाला मल्लाह किसी तूफान से बच जाता है तो वह मेरी को कुछ भेंट चढ़ाने अवश्य जाता है। मेरी की यह स्मृति "आवर लेडी आफ लोम्बर्ड जाइड" कहलाती है।

फ्लैन्डर्स के किसान बड़ा सादा जीवन व्यतीत करते हैं। काली रोटी, आलू और नमकीन मछली अथवा सुअर का माँस उनका प्रधान भोजन है। यहाँ के लोग साल भर इसी भोजन पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। कभी उन्हें सुअर की चर्बी रोटियों पर भोजन के लिये मिल जाती है। यहां पर बहुत से लोग ऐसे मिलेंगे जिन्होंने अपने जीवन में कभी मक्खन नहीं खाया है। तो भी यहाँ के निवासी बड़े हट्टे-कट्टे दिखाई पड़ते

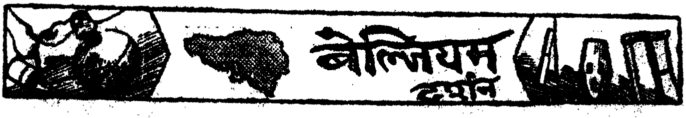
हैं। फ्लैन्डर्स निवासी काली कहवा तथा बियर शराब पिया करते हैं, किन्तु महँगा होने के कारण सभी इनका प्रयोग नहीं कर सकते।

यहाँ के निवासी लड़के, स्त्रियों और लड़कियों को लेकर खेत में सवेरे ही काम करने चले जाते हैं। यह लोग सवेरे ४ या ५ बजे उठते हैं। खेतों के जाने के पहले यह लोग रोटी का एक टुकड़ा खाकर पानी पीते हैं। खेत में साढ़े ग्यारह या बारह बजे तक काम करने के बाद यह लोग रोटी और सुअर का मांस खाते हैं और थोड़ी देर आराम करके फिर काम में लग जाते हैं और शाम को लगभग ४ या ५ बजे तक काम करते हैं। कुछ साल पहले बच्चे लोग ५ आने से ७ आने तक, औरतें आठ आने और मर्द एक या डेढ़ रुपया रोज मजदूरी पाते थे। किन्तु अब मज़दूरी काफी बढ़ गई है। मजदूरी के साथ साथ भोजन सामग्री का मूल्य भी बढ़ गया है। इसलिये वहां के मजदूरों को अपना पेट भरने के लिये कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

ऐसा जीवन बड़ा कठिन तथा बेकार प्रतीत होता है किन्तु वहाँ के निवासी ऐसे जीवन को बहुत पसंद

करते हैं। इतवार के दिन वहाँ छुट्टी मनाई जाती है। सवेरे सभी लोग चर्चों में जाते हैं, फिर सारा दिन गाने बजाने और खेलने में व्यतीत किया जाता है। बुड्ढे लोग शराब बहुत पीते हैं। वहाँ छोटे से छोटे गाँव में भी ४ या ६ शराब की दूकानें पाई जाती हैं। कानूनी तौर पर शराब का एक ग्लास नहीं बेचा जाता इसलिये किसी भी पीने वाले को दो ग्लास शराब मोल लेनी पड़ती है। एक ग्लास शराब का मूल्य लगभग एक पेनी (एक आना) होता है। लोग शराब इतवार को शाम और सोमवार को सवेरे पीते हैं। नगरों के मजदूर सोमवार को छुट्टी मनाते हैं। बेल्जियम में शराब पीने का रिवाज बहुत है।

यहाँ के गाँवों में "केरमेस्से" नामक मेला प्रति वर्ष गर्मी के दिनों में होता है। यह मेला हर एक गांव में तीन या चार रोज तक मनाया जाता है। सभी लोग इस मेले की प्रतीक्षा हफ़्तों पहले से करते हैं और हफ़्तों बाद तक इसकी चर्चा होती रहती है। सुन्दर अच्छे कपड़े पहन कर लोग मेले में जाते हैं और वहाँ काफी पैसे खर्च करते हैं।

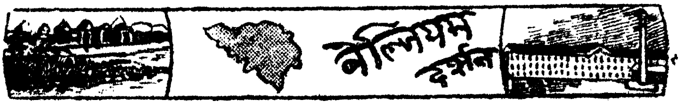


मेले के अवसर पर गाँव की गलियाँ दूकानों से भर जाती हैं। दूकानों में खिलौने, मिठाइयाँ और दूसरी लुभाने वाली वस्तुएँ होती हैं। वहाँ घूमने से शीघ्र ही पैसा जेब के बाहर निकल जाता है। बेल्जियम का राष्ट्रीय झंडा चारों ओर मकानों तथा दुकानों पर फहराता हुआ दिखाई पड़ता है। गाने बजाने वाले गली गली में घूम कर गाते बजाते रहते हैं। स्थान स्थान पर गाने बजाने होते हैं। छोटे लड़के और लड़कियाँ लकड़ी के रंग बिरंगे घोड़ों पर चढ़े घूमते रहते हैं। युवा स्त्री तथा पुरुष होटलों और सरायों में एक साथ नाचते हैं। छोटे लड़के तथा लड़कियां जोड़े के जोड़े इधर उधर कूदते रहते हैं।

सरायों के कमरे काफी बड़े होते हैं किन्तु तो भी वहाँ इतनी भीड़ होती है कि साँस लेना दुर्लभ हो जाता है। गाने, बजाने, हँसने और बोलने के कारण बड़ा शोर होता रहता है। गाना बजाना लगभग तीन चार बजे सवेरे तक होता रहता है। बहुधा आपस में झगड़ा भी हो जाता है। बेल्जियम के लोग थोड़ा गुस्सा आने पर शीघ्र ही चाकू निकाल कर मारने पर प्रस्तुत हो

जाते हैं, इसलिये ऐसे स्थान पर जाना अच्छा नहीं मालूम होता।

बेल्जियम के ये मेले बहुत प्राचीन हैं। अब इनमें सुधार होने लगा है और बड़े मेले के प्रबन्धकर्ता लोग बड़े प्रबन्ध के साथ इन्हें करने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु यदि प्राचीन ढंग का मेला देखना हो तो वह फ्लैन्डर्स के गाँवों में देखा जा सकता है।



बेल्जियम में आने जाने के साधन

बेल्जियम में यात्रा करना बड़ा सरल है। वहां आने जाने के साधनों का व्यय बहुत कम है। देश की यात्रा छोटे छोटे बोटों पर चढ़ कर नहर द्वारा बड़ी सुगमता से की जा सकती है। वहां बहुत सी नहरें हैं। फ्रांस से बेल्जियम के दूसरे सिरे तक यात्रा बोटों पर ही की जा सकती है। और मार्ग के सुन्दर हरे भरे खेत गांव तथा बड़े बड़े नगर पड़ेंगे। बेल्जियम की नहरें अधिकतर कोयला, लकड़ी आदि सामान ढोने के लिये प्रयोग की जाती हैं। बेल्जियम निवासी अपनी नहरों को साफ तथा अच्छी दशा में रखने के लिये अधिकतर नहरों द्वारा ही अपने सामान भेजते हैं। उन्हें इस प्रकार अपने सामान भेजने में खर्च कम पड़ता है और अधिक सुभीता भी रहता है।

नहरों के तट पर खड़े होकर नावों का देखना बड़ा सुहावना प्रतीत होता है। ये नावें कभी कभी तीन चार एक साथ बांध कर भाप के इंजिन वाली नाव द्वारा खींची जाती हैं। घोड़े द्वारा भी नावें खींची जाती हैं।

हमारे यहां की भांति बीच में गड़ी हुई लकड़ी में डोर लगाकर वहां के लोग भी नाव खींचते हैं।

नावों को खेने वाले मल्लाह नावों पर ही अपने बाल बच्चों के साथ निवास करते हैं। नावों पर ही उनके जीवन का अन्त होता है। ये नावें काफी बड़ी होती हैं और बोर्ड के ऊपर एक सुन्दर कमरा होता है, जिसमें खिड़कियां आदि होती हैं। खिड़कियों में सुन्दर पर्दे लगे रहते हैं। नावें सुन्दर चमकीले रंग से रंगी रहती हैं।

बेल्जियम की भूमि चपटी तथा बराबर होने के कारण वहाँ सब कहीं साइकिल बड़ी सुगमता से चलाई जा सकती है। अधिकांश सड़कों के बगल में साइकिल चलाने के लिये मार्ग बना रहता है। इसी बने हुये मार्ग पर लोग साइकिल चलाते हैं। सभी साइकिल चलाने वालों को साइकिल टैक्स देना पड़ता है। हमारे यहां के प्रतिकूल बेल्जियम में सवारियों को बाएँ के स्थान पर दाएँ ओर से जाना पड़ता है।

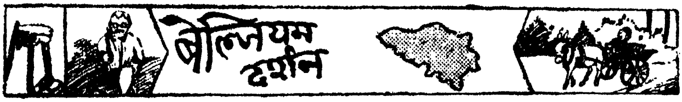
बेल्जियम में छोटी छोटी रेलगाड़ियां देहातों में चलती हैं। कुछ गाड़ियाँ भाप से और कुछ बिजली से

चलती हैं। ये गाड़ियाँ छोटे से छोटे गाँव में भी ठहरती हैं, इसलिये वहां के निवासियों के लिये बड़ी लाभदायक हैं। इन गाड़ियों का किराया भी बहुत कम होता है। कुछ आनों में कई मील की यात्रा की जा सकती है। प्रत्येक गाड़ी के बाहर की ओर प्लैटफार्म बना रहता है जहां यात्री खड़ा होकर मार्ग के दृश्यों को देख सकता है। इन गाड़ियों के डिब्बे आदि से अन्त तक खुले रहते हैं। पुरोहितों और सैनिकों को गाड़ियों में आधा किराया देना पड़ता है। इनमें यात्रा करने वाले बेल्जियम के किसान नीले कपड़े पहने रहते हैं, स्त्रियाँ काला लम्बा चोगा पहनती हैं और सिर पर स्वेत टोपियाँ दिये रहती हैं। इन गाड़ियों के मर्द यात्री सिगरेट तथा सिगार पीते रहते हैं और स्त्रियाँ अपने घर सम्बन्धी बातें करती रहती हैं। इन गाड़ियों द्वारा बेल्जियम के देहात की यात्रा बड़ी अच्छी तरह होती है।

योरुप महाद्वीप में सबसे पहले बेल्जियम में ही रेलवे बनाई गई थी। यह रेलवे लाइन १८३५ ई० में बनी थी और ब्रूसेल्स से मैलाइन्स तक बनाई गई थी। अब बेल्जियम में बहुत सी रेलवे लाइनें हैं। जो सभी बेल्जियम सरकार की हैं।

देश दर्शन

बेल्जियम की रेलों में सीज़न टिकट मिलता है। यह टिकट कम से कम ५ दिन के लिये होता है। सीज़न टिकटों द्वारा बहुत लोग यात्रा करते हैं। क्योंकि यह बड़ा सस्ता पड़ता है। ५ दिन के टिकट के लिये प्रथम श्रेणी का टिकट लगभग १८ रुपये आठ आने को, द्वितीय श्रेणी का बारह रुपये आठ आने को और त्रितीय श्रेणी का टिकट ७ रुपये १ आने को मिलता है। इन टिकटों को लेकर बेल्जियम सरकार की गाड़ी में सब कहीं यात्रा की जा सकती है। यात्री को अधिकार रहता है कि जहां और जब चाहे गाड़ी से उतर तथा चढ़ सकता है। टिकट लेते समय अपनी फोटो की एक छोटी कापी स्टेशन पर देनी पड़ती है। ऐसा करने के लिये १ घंटा पहले स्टेशन पर इत्तला करनी पड़ती है। यात्री घर बैठे ही अपनी फोटो तथा चिट्ठी भेज कर टिकट बनवा सकता है। टिकट के ऊपर उस व्यक्ति की फोटो चिपका दी जाती है। टिकट लेने वाले को ३ रुपये अधिक देना पड़ता है जो उसकी यात्रा खतम होते समय किसी भी स्टेशन पर वापस कर दिया जाता है। सीज़न टिकटों को बेल्जियम में "अबोन्नमेंन्ट" कहते हैं।



ये सीज़न टिकट स्कूल जाने वाले बालकों और मज़दूरों को भी मिलते हैं। बेल्जियम निवासी जब गाड़ी पर बैठते हैं तो खिड़की बन्द कर लेते हैं। वे शुद्ध वायु के शौकीन नहीं होते और सर्दी लगने से बहुत डरते हैं। यह लोग बिना किसी की परवाह किये ही डिब्बे में घुसते ही खिड़की बन्द कर देते हैं।

प्राचीन नगर

बेल्जियम के नगर

बेल्जियम एक बहुत छोटा सा देश है। आस्टेण्ड से लीज नगर की दूरी सबसे अधिक है। किन्तु यह दूरी केवल चार घंटे में ही तै की जा सकती है। बेल्जियम के एक किनारे से दूसरे किनारे तक की यात्रा कुछ ही घंटों में की जा सकती है। वहाँ एक नगर से दूसरे नगर जाना बहुत सरल है।

आस्टेण्ड नगर बेल्जियम तट के मध्य में स्थित है। समुद्र के किनारे वाले नगरों में यह सबसे बड़ा नगर है। यह नगर बहुत पुराना भी है। प्राचीन काल में यह नगर बड़ा सुरक्षित था। यहाँ पर बहुत से होटल, ठहरने के घर और बड़ी बड़ी दुकानें हैं। गर्मी की ऋतु में लोग वहाँ बड़ी संख्या में भ्रमण करने के लिये जाते हैं। उन दिनों वहाँ खेल तमाशा, नाच-गाने आदि होते हैं। लोग सुख पूर्वक समुद्र में स्नान भी करते हैं। नगर के समुद्री तट की ओर एक लम्बा बाँध बना है। बाँध के एक भाग के समीप नहाने वाली मशीनें बँधी रहती हैं। आस्टेण्ड रहने के लिये अच्छा स्थान नहीं है। ग्रीष्म काल में यहाँ लोगों की बड़ी भीड़ रहती है। चारों ओर

चहल-पहल दिखाई पड़ती है। लोगों का समय गर्मी के दिनों में खाने, शराब पीने, कपड़े पहिनने और जुये के खेलने में ही व्यतीत होता है। जाड़े के दिनों में यह नगर बिलकुल उजाड़ और सुनसान हो जाता है। उस समय मछली मारने वाले बोटों और डोअर से आने जाने वाले स्टीमरों के सिवा और कुछ नहीं दिखाई पड़ता।

आस्टेण्ड से ब्रूगेस नगर की यात्रा बीस मिनट में समाप्त होती है। यह नगर "मृतक नगर" कहलाता है। किसी समय में यह नगर बहुत बड़ा सुखी और धनी नगर था। उस समय नगर चारों ओर मज़बूत दीवार से घिरा हुआ था। एक छोटी खाड़ी द्वारा नगर समुद्र से मिला था। और नगर में बड़े बड़े धनी व्यापारी निवास करते थे। इन व्यापारियों के घर सोने, चाँदी, हीरे जवाहिरात, रेशम और कपड़े आदि से भरे रहते थे। राजे, महाराजे इन लोगों से कर्ज लिया करते थे। वहाँ के सौदागर संसार भर में प्रसिद्ध थे। सारे योरुप, भारतवर्ष आदि के जहाज वहां जाकर ठहरते हैं। फ़्लेमिश जुलाहे उस समय में बड़े प्रसिद्ध थे और ब्रूगेस ऊन के व्यापार के लिये सब से बड़ा नगर था। यह उत्तरी

वेनिस कहलाता था। नगर में २,००,००० कारीगर रहा करते थे। नगर सुन्दर चर्चों तथा विशाल भवनों से सुसज्जित था। नगर में असंख्य टोर्नामेन्ट तथा खेल तमाशे होते थे। वहाँ पर बड़े २ चित्र-कला-कारों का जन्म हुआ।

किन्तु ब्रूगस की यह सारी विशालता जाती रही जो समुद्री खाड़ी ब्रूगस को समुद्र से मिलाये हुये थी। वह सूख गई। नगर में बहुत से बलवे तथा लड़ाई झगड़े हुए, जिसके कारण विदेशी व्यापारी नगर छोड़ कर एन्टवर्प चले गये। इस प्रकार ब्रूगस की अवनति हो गई है। अब यह केवल एक छोटा सा दुःखी नगर रह गया है। इसकी दशा अब इतनी रह गई है कि इसकी सड़कें भली भाँति रौशन नहीं रहती हैं। नगर उजाड़ तथा सूना प्रतीत होता है। नगर में किसी प्रकार का व्यवसाय नहीं होता। कुल लोग उच्च श्रेणी के रहते हैं जो "पेटी नोबुल्स" (छोटे अमीर) कहलाते हैं। गरीबों की संख्या बहुत है जो अधिकतर दान पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

इस उजाड़ नगर में बहुत सी वस्तुएँ देखने योग्य

हैं। बेल्जियम जाने वाला प्रत्येक मनुष्य इस नगर के देखने की लालसा रखते हैं। यहां पर भांति भांति के रंग बिरंगे प्राचीन भवन बने हैं, जिनकी हस्त कला चित्र कारी देखने योग्य है। नगर के दुकानदार अपने सामान गलियों में पत्थरों के ऊपर रखे बेचते रहते हैं नगर की गलियों में छोटी गाड़ियां चलती हैं। जिन्हें कुत्ते खींचते हैं। स्त्रियां अपने द्वारों पर बैठी लैस बनाती रहती हैं। दूकानों के सामने बरामदों या चबूतरों पर मेजें लगी दिखाई पड़ती हैं, जहाँ पर लोग बैठे हुये शराब तथा कहवा पीते रहते हैं। मज़दूर लोग लकड़ी के जूते पहिने हुये आते जाते दृष्टि गोचर होते हैं।

बेल्जियम के नगरों में "बेल्फ्रीरी" बने हैं। यह गुम्बद अथवा स्तम्भ बड़े ऊँचे होते हैं। प्राचीन समय में इन्हीं स्तम्भों पर बैठा हुआ चौकीदार नगर को आक्रमण अथवा खतरे की सूचना देता था और उन्हें युद्ध के लिये तयार होने को कहता था। ब्रूगस के स्तम्भ सब नगरों से अधिक सुन्दर हैं। उसमें प्रत्येक १५ मिनट के पश्चात् घंटी बजती है।

ब्रूगस से घेन्ट नगर की यात्रा केवल ४० मिनट

की है यह भी एक प्राचीन नगर है। प्राचीन काल में इस नगर के निवासी बेल्जियम में सबसे अधिक स्वतंत्र तथा सूरमा थे। यहाँ के घंटाघर के घंटे का नाम रौलैण्ड था। जब कोई राजा यहाँ के निवासियों के विरुद्ध कर लगाता था तो यह घंटा बजाया जाता था और नगर के सभी वीर योधा एकत्रित हो जाते थे और क्षण मात्र में कर लेने वालों को मार भगाते थे। उन पर राज्य करना सरल कार्य न था। वे लोग इंगलैण्ड के साथ ऊन का व्यापार करके बड़े धनी हो गये थे। आखिर बुरा समय आया और लगभग २०० साल तक यह नगर बड़ी अवनति की दशा में रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी में वाटर लू के युद्ध के पश्चात् जब बेल्जियम में शान्ति की स्थापना हुई। उस समय से घेन्ट निवासी फिर जी जान लगाकर परिश्रम करने लगे। उनके परिश्रम के फल स्वरूप आज उनका नगर एक उन्नतिशील नगर है और एक नहर द्वारा स्चील्ट नदी से मिला हुआ है। वहाँ पर हार्बर भी है और बड़े बड़े जहाज आकर ठहरते हैं। नगर के नर्सरी गार्डेन (फूल पैदा की जाने वाली वाटिका) में बहुत सुन्दर

फूल पैदा किये जाते हैं और बहुत बड़ी संख्या में विदेश में चारों ओर भेजे जाते हैं। फूलों की अधिकता के कारण ही घेन्ट सिटी आफ फ्लावर (पुष्पों का नगर) के नाम से प्रसिद्ध है। नगर के बहुत से प्राचीन विशाल भवन अब तक मौजूद हैं।

ऐन्टवर्प नगर स्चेल्ट नदी पर स्थित है। घेन्ट आदि नगरों की भाँति यह भी एक प्राचीन नगर है। कहा जाता है कि किसी समय में स्चेल्ट नदी में एक राक्षस रहता है। वह प्रत्येक जहाज के सरदार से रुपया मांगता था, जो रुपया देने से इन्कार करता था वह उसका एक हाथ काट कर नदी में फेंक देता था। डच भाषा में वर्पन शब्द के अर्थ फेंकने के होते हैं। जहां पर वह राक्षस रहता था वह स्थान "हैंराड वर्पन" कहलाता है। उसी के नाम पर नगर का नाम ऐन्टवर्प पड़ा है। नगर के एक चौराहे पर ब्राबो की मूर्ति है, जिसने उस राक्षस को मारा था।

ब्राबो की मूर्ति के समीप ही एक बड़ा सुन्दर कैथीड्रल (गिरजाघर) बना हुआ है। यह योरुप के विशाल

गिरजाघरों में गिना जाता है। गिरजाघर के भीतर प्रसिद्ध चित्रकार रूबेन्स की चित्रकारी की हुई है।

ऐन्टवर्प नगर में प्लैनटिन मोरेटस का घर देखने योग्य है। यह तीन सौ साल पहले प्लैनटिन नामक व्यक्ति का था। प्लैनटिन एक प्रकाशक था, उसने प्रकाशन उद्यम द्वारा बड़ा धन एकत्रित किया था। उसके उत्तराधिकारियों ने मोरेटस की पदवी धारण की थी और प्रिन्टिंग व्यवसाय को बहुत काल तक चलाते रहे। वहाँ पर सोलहवीं शताब्दी के टाइप तथा प्रिन्टिंग प्रेस हैं और बैठने तथा सोने के कमरों में सामान उसी काल के हैं। इस घर के दिखाने वाले नौकर चाकर प्राचीन समय के ही वर्दी पहिनते हैं। वहां पर जाकर मनुष्य बेल्जियम के सोलहवीं सदी के जीवन का अध्ययन भली भांति कर सकता है।

ऐन्टवर्प नगर एक बड़ा प्रसिद्ध नगर है। इसकी गणना दुनिया के बड़े बंदरगाहों में होती है यहां पर इतने अधिक जहाज आया करते हैं कि उनके ठहरने का स्थान नहीं रहता। ऐन्ट वर्प रेलों तथा नहरों द्वारा योरुप के व्यवसायी प्रदेशों से मिला हुआ है। इस

नगर के लिये स्चेल्ट नदी बड़ी उपयोगी है, जिसके द्वारा व्यापारी संसार के प्रत्येक भाग को जा सकते हैं।

लगभग सौ वर्ष पहले एन्टवर्प फ्रान्सीसियों के अधिकार में था। नैपोलियन अपनी हार के पश्चात् भी ऐन्टवर्प पर अपना अधिकार रखना चाहता था। उसका कहना था कि ऐन्टवर्प उसके लिये एक प्रान्त के बराबर है। ऐन्ट वर्प के कारण ही नैपोलियन संधि नहीं कर सका था। वह वहाँ पर अपना जहाजी बेड़ा रखना चाहता था जिससे वह इँगलैंड को भयभीत कर सकता था। स्चेल्क नदी केन्ट तथा एसेक्स से बहुत समीप है, इसलिये सेन्ट वर्प पर अंग्रेजों के विरुद्ध किसी राष्ट्र का अधिकार होना अंग्रेजों के लिये खतरनाक है।

सेन्ट वर्प से ब्रूसेल्स रेल द्वारा यात्रा करने पर मेच-लिन नामक नगर मार्ग में दाहिनी ओर पड़ता है। यहां का सेन्ट रोम वोन्ड के कैथीड्रल का स्तम्भ प्रसिद्ध है। वह नगर एक धार्मिक स्थान माना जाता था और यह कैथीड्रल भेंट चढ़ाये हुये रुपये से बना है। अब यह बेल्जियम के आर्क बिशप के रहने का स्थान है।

ब्रूसेल्स बेल्जियम का सबसे अच्छा नगर है।

यह नगर निवास करने के लिये बड़ा ही रमणीक है। यह नगर बड़ा साफ, चमकीला और खुशहाल है। प्राचीन दीवारें जिनसे नगर घिरा हुआ था अब गिरा दी गई हैं। सड़क के इधर उधर सवारी करने के लिये मार्ग है और वहां छायेदार पेड़ लगे हुये हैं। वहाँ पर एक पार्क है, जिसमें वहुत से पेड़ तथा छायादार मार्ग हैं। पार्क में एक गोला तालाब है जिसके बीच में एक फव्वारा घूमता है। इस पार्क के एक कोने में बेल्जियम के राजा का महल है और दूसरे कोने में पार्लियामेन्ट भवन हैं। सड़क पर हर प्रकार के सवारियों की भीड़ लगी रहती है।

ब्रूसेल्स निवासी बड़े हँसमुख तथा दिल्लगीबाज़ होते हैं। वे सदैव मज़ाक करते रहते हैं। बेल्जियम के जिस भाग में ब्रूसेल्स बसा है उसे ब्राबैण्ट कहते हैं। नागरिक लोग सुस्त तथा आडम्बी पुरुष को नहीं पसन्द करते। वे अपने नगर को छोटा पेरिस कहते हैं।

ब्रूसेल्स नगर के दक्षिण-पश्चिम की ओर एक बड़ा बन है। यह 'स्वागनीज़ का बन' कहलाता है। इस बन के नगर के समीप वाला भाग घोड़े की सवारी करने

तथा टहलने के लिये प्रयोग किया जाता है। इस भाग के बीच में एक झील है, जिसके बीच में एक छोटा द्वीप है। इस छोटे द्वीप पर एक कहवा घर बना है, जो चैलेट राबिनसन कहलाता है। बेल्जियम निवासी इस द्वीप में बहुधा अपने गर्मी की संध्या का आराम लेने जाते हैं लोग पेड़ों के नीचे मेज़ों पर बैठ कर काफी, कहवा पिया करते हैं। इस छोटे द्वीप में कबूतर बहुत हैं। यह कबूतर इतने मुँह लगे हैं कि इधर उधर घास पर फुदकते रहते हैं और बच्चों के हाथ से भोजन छीन कर खा जाते हैं।

बेल्जियम निवासी जो मध्यम श्रेणी के होते हैं वे बहुधा अपने स्त्री बच्चों के साथ अपने छुट्टी के समय बिताने के लिये घर के बाहर जाते हैं। बच्चे आगे आगे चलते हैं और माता-पिता हाथ पकड़े हुये साथ साथ चलते हैं। यह लोग साढ़े बारह बजे दोपहर का भोजन करते हैं। संध्या समय पिता सब से छोटे बच्चे को कंधे पर लिये और मां बच्चों को पकड़ाये हुये ऐवन ल्वाएस से लौटते झुंड के झुंड दिखाई पड़ते हैं।

ऐवन-ल्वाएस नगर के आधुनिक भाग में स्थित है। प्राचीन ब्रूसेल्स नगर मान्टेन डे ला काऊर नामक सड़क होकर जाना पड़ता है। यह सड़क ग्रान्ड प्लेस नामक

सड़क को जाती है। ग्रांड प्लेस सड़क के चारों ओर विशाल भवन बने हुये हैं। ये सभी भवन प्राचीन अमीरों तथा व्यापारियों के हैं। इनमें 'होटल डे विल्ले' भवन बड़ा ही सुन्दर तथा विशाल है।

गर्मी की ऋतु में ग्रान्डेप्लेस में पुष्पों का बाज़ार लगता है। रात के समय इस सड़क का दृश्य बड़ा ही सुहावना प्रतीत होता है।

ब्रूसेल्स नगर की सभी दर्शनीय वस्तुओं का वर्णन करना इस स्थान पर कठिन है। वहाँ बहुत से सुन्दर चर्च, विशाल भवन, रंग विरंगी गैलरियाँ, अजायब घर विशाल लाइब्रेरियां तथा वाटिकायें हैं। सबसे बड़ा भवन न्यायालय का है। इसके बनाने में ३ करोड़ रुपया लगा है। यह ऊँचे स्थान पर बना है।

लोवेन में प्राचीन विश्वविद्यालय है। लीज और चारलेराय नगरों में लोहे के कारखाने हैं। कोर्ट राय नगर में अच्छा मलमल तयार होता है। टोरनाय में दरी बनती है। मोन्स नगर अपने कोयलों की खानों के लिये प्रसिद्ध है।

ब्रूसेल्स से दक्षिण की ओर चलने पर स्वागनीज़

वन के पश्चात् धरातल का दृश्य बदल जाता है और अधिक रँग बिरंगे दृश्य दिखाई पड़ने लगते हैं। म्यूज़ नदी एक अद्भुत घाटी होकर बहती है। यह घाटी शान्तिमय गावों, वाटिकाओं, जंगलों, घास के मैदानों से परिपूरित है। इसमें सीधे ढाल भी पाये जाते हैं जो वनों तथा वृक्षों से ढके हैं। ढालों पर कहीं कहीं विशाल चट्टानें, कँदरायें और खोहें हैं। जंगलों में हिरन, नीलगाय और रीछ आदि जंगली जानवर रहते हैं। यह प्रान्त आर्डेन्स प्रान्त कहलाता है।

म्यूज की घाटी में तीन प्रसिद्ध नगर हैं। लीज, नामूर, और डिनैन्ट तीनों नगर म्यूज नदी के किनारे पहाड़ी पर बसे हैं। पहाड़ी के ऊपर एक किलाबना है।

सम्ब्रे नदी पश्चिम से आकर नामूर के समीप म्यूज से मिल जाती है। लेस्से तथा सम्ब्राएस नदियाँ दक्षिण की ओर से आकर मिलती हैं। सम्ब्राएस नदी का तट बहुत ऊँचा है।

बेल्जियम का यह भाग बड़ा सुहावना है, जो लोग गर्मी के दिनों में समुद्र की ओर नहीं जाते वे इस भाग के गांवों तथा नगरों में आकर अपना समय व्यतीतकरते हैं।

देश दर्शन

बेल्जियम के बच्चे

जब बच्चे पैदा होते हैं तो मित्रों के पास चीने के डलों का संदूक भेजा जाता है। यदि लड़का पैदा होता है तो संदूक लाल फीते से और यदि लड़की होती है तो नीले फीते से संदूक बँधा रहता है।

बच्चे का नाम करण धर्म-माता (गाड मदर) करती है वह या तो बच्चे को उसका खानदानी नाम रखती है अथवा किसी साधु के नाम पर रखती है। लड़कियों का अधिकतर मैरी नाम, वर्जिन मैरी के नाम पर रखा जाता है। ७ साल तक लड़कियों को नीले तथा श्वेत रंग के कपड़ों के सिवा और किसी रंग के कपड़े नहीं पहिनाये जाते। ७ वर्ष पूरे होने पर बपतिसमा दिया जाता है। बपतिसमा के समय धर्म-पिता (गाड फादर) धर्म-माता (गाड मदर) तथा लड़की की माँ को धर्म-पिता (गाड फादर) एक एक जोड़ा दस्ताना देता है। यह बड़े अचम्भे की बात है कि अधिकाँश माता-पिता की इच्छा होती है कि उनके लड़की पैदा हो क्योंकि लड़के का सैनिक बनना आवश्यक होता है।

लड़कियाँ बच्चों की देख भाल के लिये जो नौकरानियाँ रखी जाती हैं उनको मामूली तौर पर बहुत कम वेतन दिया जाता है। ये नौकरानियाँ चौदह-पन्द्रह साल की युवा स्त्रियाँ होती हैं, जो भली भांति बच्चों की देख भाल नहीं कर सकतीं जिसके कारण बच्चे खराब हो जाते हैं। और अपने माता पिता का कहना नहीं मानते लड़के बहुधा अपने माता पिता के आपसी झगड़ों को सुनते रहते हैं, जो उन्हें कभी न सुनना चाहिये।

बड़ों के साथ रहने से इन बालकों की आदत बिगड़ जाती है वे ऐसी शिक्षा ग्रहण करने लग जाते हैं कि जो उनके जीवन के लिये हानिकारक हो जाती है।

वहाँ के लड़के अपने माता पिता के साथ होटल आदि में भी जाते हैं और वहाँ बड़ा उपद्रव मचाते हैं जिसका बन्द करना कठिन होता है।

बेल्जियम के सभी बच्चों को कानून के अनुसार शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है। बेल्जियम के स्कूलों में धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती है केवल उन्हीं स्कूलों में धार्मिक शिक्षा दी जाती है जो चर्च के आधीन होते

हैं। सभी बच्चों को धार्मिक प्रश्नोत्तर (केटेकिज़्म) की शिक्षा घर पर दी जाती है।

ग्यारह अथवा बारह वर्ष की अवस्था में बच्चे कम्यूनियन संस्कार में भाग लेते हैं। यह संस्कार ईस्टर के दो संडे (रविवार) पहले होता है।

कम्यूनियन के दिन सभी लोग कपड़े पहिन कर कम्यूनियन में जाते हैं। कम्यूनियन के लिये खास कपड़े दूकानों पर बने बनाये बिकते हैं जिन्हें लोग पहिनने के लिये खरीदते हैं। लड़के काले कपड़े पहिनते हैं और लड़कियाँ श्वेत कपड़े पहनती हैं। लड़कियां जूते बहुत कस कर पहिनती हैं जिससे उनके पाँव छोटे प्रतीत हों।

बच्चे प्रथम कम्यूनियन के पश्चात् मित्रों के पास ले जाये जाते हैं और वे बच्चों को भेंट तथा इनाम आदि देते हैं। बेल्जियम के बालक जीवन में प्रथम कम्यूनियन का महत्व बहुत बड़ा है।

संक्षिप्त इतिहास

प्राचीन काल में बेल्जियम बहुत से छोटे छोटे राज्यों में बटा हुआ था। प्रत्येक राज्य का शासक कोई न कोई काउन्ट, डियूक अथवा बैरन होता था। ये शासक आपस में एक दूसरे से युद्ध तथा संधि करते रहते थे। ब्राबैन्ट का डियूक फ्लैन्डर्स के काउन्ट, मैलाइस के लार्ड और लीज के प्रिन्सेज़ आदि राज्य करते थे।

इन राज्यों में फ़लैन्डर्स राज्य सब से प्रधान माना जाता था। क्योंकि घेन्ट, ब्रूगेस और वाइप्रेस आदि नगर अपनी कला-कौशल तथा व्यापार के कारण बहुत उन्नति कर गये थे।

नगरों में सौदागर तथा रोज़गारी लोग संस्थाओं द्वारा एक दूसरे से बँधे हुये थे। उनकी संस्थाओं को गिल्ड कहते हैं। जुलाहों और बकर कसाबों आदि की गिल्ड अपनी अपनी अलग थी। यह लोग अपनी रक्षा नोबुल्स (अमीरों) से आपस में मिल कर करते थे। उच्च श्रेणी वाले इनकी स्वतंत्रा छीनने का बहुधा प्रयत्न करते थे।

किन्तु ये सभी नगर सदैव एक दूसरे से लड़ा करते थे। प्रत्येक नगर अपने अधिक धनी होने का ही प्रयत्न

करता था। घेन्ट, वाइप्रे और ब्रूगेस आदि नगर एक दूसरे को तवाह करने का सदैव प्रयत्न करते रहते थे। इन्हीं के समीप इनके झगड़े का लाभ उठाता हुआ बर्गन्डीज़ का राज्य धीरे धीरे उन्नति कर रहा था। यह राज्य इन छोटे राज्यों पर अपनी आंख जमाये हुये था।

आखिरकार जब फ़्लैन्डर्स का काउन्ट मरा तो बर्गन्डी के डियूक फिलिप हार्डी ने फ़्लैमिश राजकुमारी से सादी करके फ़्लैन्डर्स पर अपना अधिकार जमाया क्योंकि फ़्लैन्डर्स के काउन्ट के कोई पुत्र न था। धीरे धीरे बर्गन्डी का डयूक सारे बेल्जियम का राजा बन गया केवल लीज की प्रिन्सपैलिटी स्वतंत्र रह गई। इस का राजा बिशप-प्रिन्सेज था।

बर्गन्डी का अन्तिम डियूक चार्ल्स बोल्ड था। वह बड़ा बहादुर था, किन्तु बड़ा भयानक तथा निर्दयी था। वह एक युद्ध में मारा गया और उसकी पुत्री बर्गन्डी की मैरी ने एक आस्ट्रियट डियूक के साथ व्याह कर लिया। डियूक का नाम मैक्सिमिलियन था। इस प्रकार फ़्लैन्डर्स, ब्राबैन्ट आदि आस्ट्रियन साम्राज्य

घराने के अधिकार में चले गये। जिसे हैब्स बर्ग घराना कहते हैं।

मैक्सिमिलियन और मैरी के एक पुत्र था। जिसका नाम फिलिप हैन्डसम था। फिलिप का ब्याह स्पेन के राजा फर्डिनेन्ड की पुत्री जोन्ना मैड से हुआ था। इस शादी से चार्ल्स पञ्चम की उत्पत्ति हुई। चार्ल्स पञ्चम बड़ा प्रतापी राजा हुआ, उसके साम्राज्य में सारा स्पैनिश साम्राज्य, जर्मन साम्राज्य और नेदरलैण्ड्स (बेल्जियम और हालैण्ड) सम्मिलित था।

चालीस साल राज्य करने के पश्चात् चार्ल्स ने अपने पुत्र फिलिप को राज्य सौंप दिया। फिलिप का शासनकाल नेदरलैण्ड के लिये बड़ा प्रकोपी सिद्ध हुआ। निदरलैण्ड के निवासी स्वतंत्रता के पुजारी थे, किन्तु फिलिप उनसे घृणा करता था। निदरलैण्ड के नागरिक लोग अपने कानून तथा नियम स्वयम् बनाते थे, जिसको काउन्ट डियूक तथा हैब्सबर्ग के राजे मानते थे, किन्तु फिलिप ने उनकी यह सारी स्वतंत्रता छीन कर उनका पूरा मालिक बनना चाहता था।

फिलिप प्रोटेस्टेन्ट लोगों से भी घृणा करता था।

यह वहां बहुत थे, इस कारण वह इन लोगों का अन्त करना चाहता था, इन्हीं प्रोटेस्टेन्ट के अन्त करने के लिये ही फिलिप ने 'इन्क्वीज़ीशन' मामक कचहरियाँ स्थापित कीं। इन्क्वीज़ीशन कचहरियों का कार्य यह था कि वे प्रत्येक मनुष्य के धर्म का पता लगाती थीं और जो मनुष्य कैथलिक धर्म का अनुयायी नहीं होता था, उसे वे कत्ल कराती थीं या जीवित जलवा देती थीं।

इन अत्याचारों के कारण लोग फिलिप के विरुद्ध हो गये और अपनी स्वतंत्रता के लिये बिद्रोह कर दिया। यह बिद्रोह इतिहास में "निदरलैण्ड के विद्रोह" के नाम से प्रसिद्ध है। फिलिप के पास बहुत बड़ी सेना थी, उसके पास एक मज़बूत जहाजी बेड़ा भी था। रुपया भी उसके पास बहूत था। इसलिये उसने विद्रोह को जबरदस्ती दबा देने का प्रयत्न किया। स्पैनिश सैनिकों को विद्रोह दबाने की आज्ञा दे दी गई। चारों ओर चोरी, डाका कत्ल होने लगें। सैनिक बच्चों स्त्रियों और मर्दों को पकड़ पकड़ कर मारने तथा आग में जलाने लगे। बहुत से लोग युद्ध में मारे गये। जितना अत्याचार निदरलैण्ड पर हुआ उतना कदाचित् ही कभी इतिहास में हुआ हो।

प्रोटेस्टेन्ट लोगों का प्रधान नेता आरेन्ज राज्य का राजकुमार था। विलियम साइलेन्ट था। वह कुछ सालों तक युद्ध होने के पश्चात् और अधिक साहसी बन गया और उसने बेल्जियम तथा हालैंड से प्रतिज्ञा ले लिया कि जब तक उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त न हो जावेगी, तब तक वे स्पेन से युद्ध करने में एक दूसरे को सहायता करेंगे।

किन्तु कुछ समय के पश्चात् बेल्जियम अलग हो गया। वहां के कैथलिक निवासियों ने फिलिप की पराधीनता स्वीकार कर ली। प्रोटेस्टेन्ट निवासियों ने बेल्जियम छोड़ दिया और हालैंड में जा बसे। डच लोगों ने बहादुरी से स्पेन का मुकाबिला किया और अन्त में उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

डच की स्वतंत्रता के बाद बेल्जियम का नाम स्पैनिश निदरलैंड्स रहा और वहां स्पेन का राज्य जमा रहा। जब फिलिप की पुत्री फिलिप इसावेला का ब्याह आस्ट्रियन आर्कड्यूक अलबर्ट से हुआ तो बेल्जियम उन्हें भेंट में दिया गया। फिलिप के मरने पर इसावेला और अलबर्ट ब्रूसेल्स गये वहां उनकी शादी का उत्साह मनाया गया।

अलबर्ट की मृत्यु के पश्चात् बेल्जियम फिर स्पेन के अधिकार में चला गया किन्तु ब्रूसेल्स तथा स्पेन के बीच बड़ा युद्ध हुआ। ब्रूसेल्स लगभग सारा का सारा आग से जला दिया गया। किन्तु तो भी १७१४ ई० में बेल्जियम आस्ट्रिया को दे दिया गया और उसका नाम आस्ट्रियन निदरलैण्ड पड़ गया।

जोज़फ द्वितीय के समय तक बेल्जियम आस्ट्रिया के आधीन शान्ति पूर्वक काम करता रहा किन्तु जब जोज़फ गद्दी पर बैठा तो उसने बेल्जियम में सुधार करने का प्रयत्न किया। बेल्जियम के अधिकांश निवासी कैथलिक थे। वे उसके विरुद्ध हो गये और सुधारों का उन्होंने बड़े ज़ोरों से विरोध किया। वहां विद्रोह हो गया। जोज़फ की मृत्यु के पश्चात् विद्रोह की आग बुझ गई और कैथलिक लोग जो कुछ चाहते थे, उन्हें मिल गया।

जब फ्रांस में क्रान्ति हुई तो वहाँ के रिपबलिकन लोगों ने अपने राजा तथा रानी के सिर काट लिये। उनकी रानी जोज़फ द्वितीय की बहिन थी। फ्रांस वालों ने बेल्जियम पर धावा मारा और आस्ट्रियन निवासी

को निकाल कर अपना अधिकार जमाया। फ्रान्सीसियों ने हालैण्ड पर भी आक्रमण किया। इंगलैण्ड एक संधि द्वारा हालैण्ड की सहायता करने पर बाध्य था, इसलिये इंगलैण्ड और फ्रांस के बीच युद्ध छिड़ गया। यह युद्ध १८१४ तक चलता रहा। १६१४ में नैपोलियन की हार हुई।

जब नैपोलियन एलबा द्वीप में निर्वासित किया गया तो हालैंड और लीज को मिला कर आरेन्ज वंश को दे दिया गया। अँग्रेजों ने यह प्रयत्न किया कि प्रिन्स आफ आरेन्ज के पुत्र का ब्याह चारलोट्टे नामक अँग्रेज राजकुमारी से कर दें (जो कि इंग्लैंड की गद्दी पर बैठने वाली थी) और निदरलैंड का तट, एन्टवर्प और स्चेल्ट आदि स्थान इंगलैंड के साथ मिला दें। किन्तु चारलोट्टे की शादी जर्मन शाहज़ादा लियूपोल्ड से हुई और प्रिन्स आफ आरेन्ज की शादी एक रूसी ग्रैन्ड डचेज़ से हुई।

सन् १६१५ ई० के बाद निदरलैंड का राज्य स्थापित किया गया किन्तु बेल्जियम के कैथलिक निवासियों और हालैंड के प्रोटेस्टेन्ट लोगों में न निभी। आपस में झगड़ा होने लगा। बेल्जियम के कुछ प्रान्तों ने विद्रोह

कर दिया और बेल्जियम ने अपना अलग राज्य स्थापित करने की इच्छा प्रगट की।

बेल्जियम के इस प्रश्न का निपटारा करने के लिये लन्दन में इंगलैंड, फ्रांस, रूस, आस्ट्रिया और प्रशा ने परामर्श किया, जिसमें यह बात तै हुई कि बेल्जियम का राज्य स्थापित किया जाय और वह अपना राजा स्वयं चुन ले। बेल्जियम ने पहले फ्रांस के राजकुमार को चुनना चाहा किन्तु इंगलैंड इस पर राजी न हुआ। उसके पश्चात् उन्होंने प्रिन्स लियूपोल्ड को चुना, जो इंगलैंड ही में निवास कर रहा था। उसकी स्त्री चारलोट्टे का देहान्त हो चुका था।

सन् १८३१ ई० में लियूपोल्ड ब्रूसेल्स स्थान पर लियूपोल्ड प्रथम महाराज बेल्जियम के नाम से गद्दी पर बैठाया गया। इस प्रकार निदरलैंड के दक्षिणी प्रान्तों को मिलाकर बेल्जियम का राज्य स्थापित किया।

उस समय सन् १६१४ तक ऐन्टवर्प, ब्रूसेल्स, घेन्ट, लीज, मोन्स और ब्रूगस आदि प्रान्तों ने खूब उन्नति की और बेल्जियम एक शक्तिशाली राज्य बन गया था।

यद्यपि बेल्जियम का व्यापार बहुत उन्नति कर रहा

था, तो भी न तो उनके पास जल सेना ही थी और न व्यापारिक जहाज ही थे। सन् १६०८ ई० में बेल्जियम ने मध्य अफ्रीका के कुछ प्रान्तों पर अधिकार जमाया जो स्वयम् बेल्जियम से कई गुना बड़े थे। इस के अधिकार में आने से बेल्जियम को सेना तथा जहाजों की आवश्यकता हुई।

लगभग चालीस वर्ष पहिले लियूपोल्ड द्वितीय कांगो राज्य का राजा बनाया गया था। योरुप के बड़े राष्ट्रों ने लियूपोल्ड को वहां का राजा बनाया था। उन राष्ट्रों से लियूपोल्ड ने प्रतिज्ञा की थी कि वह वहां के निवासियों को सभ्य बनाएगा वहां से गुलामी की प्रथा उठा देगा और सभी राष्ट्रों को वहां स्वतंत्रता पूर्वक व्यापार करने का अधिकार देगा।

कुछ समय के पश्चात् यह हाल योरुप में सुनाई पड़ने लगा कि वहां के लोगों के साथ लियूपोल्ड के प्रतिनिधियों का व्यवहार अच्छा नहीं है। उन लोगों से गुलाम की भांति काम लिया जाता है और उन पर भांति भांति के अत्याचार भी किये जाते हैं। वहां के निवासियों की जायदादें ज़बरदस्ती छीनी जाती हैं और

इस प्रकार लियूपोल्ड अपने को धनी बनाने का प्रयत्न कर रहा है और अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन कर रहा है।

१९०८ ई० में बेल्जियम पार्लियामेंट ने कांगो को बेल्जियम का एक उपनिवेश बनाने का संकल्प किया। बहुत बड़ी बहस मुबाहिसा के पश्चात् कांगो देश बेल्जियम का उपनिवेश सन् १९०८ में बना लिया गया। सन १९०९ ई० में लियूपोल्ड की मृत्यु हो गई और उसका भतीजा अलबर्ट गद्दी पर बैठा। अलबर्ट स्वयम् कांगो देश की जाँच करने के लिये गया। आजकल कांगो का प्रबन्ध और दूसरे योरुप के राष्ट्रों के उपनिवेशों की भांति ही होता है।

जब कोई जहाज बेल्जियम से कांगो प्रदेश को जाता है तो बड़ी खुशी मनाई जाती है। दर्शकों की भीड़ इकट्ठा हो जाती है। बैण्ड बजाया जाता है और झंडा फहराया जाता है।

बेल्जियम के नरम दल वालों, कैथलिक लोगों और प्रोटेस्टेन्ट पादरियों में बड़ा झगड़ा होता है। वे अपने झगड़ों को भुलाने के सिवा बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं।

१९१४ ई० से बेल्जियम में शिक्षा अनिवार्य

कर दी गई है। शिक्षा के साथ ही साथ लड़कियों को घरेलू काम तथा घरेलू अर्थशास्त्र की भी शिक्षा दी जाती है। देहात में लड़कों को कृषि करना और बाग तयार करना बतलाया जाता है। नगरों में लड़कों को व्यवसायी क्लर्क तथा अच्छा चतुर रोज़गारी बनना सिखाया जाता है। इस प्रकार वहाँ की शिक्षा वहाँ के निवासियों को अपने जीवन को सुखी बनाने में सहायता देती है।

देश दर्शन

बेल्जियम तथा १९१४ का महासमर

इँगलैण्ड, रूस, प्रशा, फ्रान्स और आष्ट्रिया राष्ट्रों ने जब बेल्जियम को अपना राज्य स्थापित करने तथा अपना राजा चुनने के लिये कहा था तो सभों ने यह तै किया था कि वे सभी मिल कर बेल्जियम की रक्षा करेंगे और उस पर आक्रमण न करेंगे। यदि उनमें आपस में भी झगड़ा होगा तो भी किसी की सेना बेल्जियम में न घुसेगी और बेल्जियम एक तटस्थ राष्ट्र माना जावेगा और यदि कोई राष्ट्र इसके विरुद्ध करेंगे तो शेष राष्ट्रों का धर्म होगा कि वे उसके विरुद्ध मिल कर युद्ध करें।

बेल्जियम निवासियों ने यह सोच कर कि कदाचित् कभी उन पर आक्रमण हो या उनका कोई भाग उनसे कोई राष्ट्र लेने का प्रयत्न करे, अपनी सेना तयार करने का निश्चय किया जिससे वह अपनी रक्षा कुछ समय तक कर सके।

लियूपोल्ड द्वितीय के समय में बेल्जियम की सेना में ४०,००० सैनिक थे। रिजर्व मिला कर कुल सेना

२००,००० थी। इस सेना को स्थायी बनने के लिये प्रतिवर्ष १३००० सैनिकों की आवश्यकता थी। बेल्जियम की जनसंख्या सन् १६०८ में लगभग ७०,००,००० थी। वहां के निवासी सैनिक बनना पसंद नहीं करते थे, इसलिये बेल्जियम सरकार को कान्सक्रिप्शन नामक कानून लागू किया, जिसके अनुसार आवश्यक संख्या में लोगों को सैनिक बनने पर विवश किया गया।

इस क़ानून के अनुसार प्रत्येक वर्ष फरवरी के महीने में जितने नवयुवक १६ वर्ष की अवस्था के होते थे, उन्हें अपने प्रान्त के प्रधान नगर में जाकर चिट्ठी निकालनी पड़ती थी, जिसका नाम चिट्ठी में निकलता था उसे सेना में जाना पड़ता था। चिट्ठी निकालने का नियम यह था, कि अगर ५० सैनिकों की आवश्यकता होती थी और १५० युवक होते थे तो १५० नम्बर तक चिट्ठियां बना ली जाती थीं। प्रत्येक युवक कमरे में जा कर सरकारी अफसरों के सामने चिट्ठी निकालता था, ५० से ऊपर वाले नम्बरों को सैनिक बनने से छुट्टी मिल जाती थी।

धनी लोग अपने पुत्रों को इससे छुड़ाने के लिये

रूपया देकर दूसरों को अपने पुत्रों के स्थान पर भेज देते थे। यह नियम रेमप्लेसमेंट के नाम से प्रसिद्ध था।

१६०३ ई० में बेल्जियम का राजा बर्लिन घूमने गया जब वह लौट कर आया तो बड़ा भयभीत था क्योंकि वहां कैसर से और उससे जो बातें हुई थीं और वहां जो कुछ उसने सुना था, उस से साफ यह बात खुली थी कि उसके देश पर आक्रमण होगा। जर्मन सेना के नेता फ्रांस पर आक्रमण करने के लिये बेल्जियम होकर अपनी योजना तयार कर रहे थे। जर्मन सेना बेल्जियम हो कर पेरिस जाने वाली थी और इस प्रकार उन्हें चार सप्ताह से भी कम लगने को था।

बेल्जियम के राजा लियूपोल्ड ने अपने देशवासियों को अपनी सेना के सुधारने के लिये बहुत कुछ समझाया और कहा कि हमें रेमप्लेसमेंट नियम को तोड़ अनिवार्य सैनिक शिक्षा का नियम बनाना चाहिये। उसने खतरे की सारी बात देश वासियों के सामने रख दी, किन्तु उसकी बातों का बहुत कम ध्यान दिया गया।

सन् १६०८ ई० में जब जर्मनी के कैसर ने अपनी इच्छा प्रकट करनी आरम्भ की और अपनी योजना

के अनुसार अपने कार्य करने लगा तो योरुप के देशों में भय के बादल छा गये और बेल्जियम के कैथलिक, नरम दल और समाजी दल ने भी एक मत हो कर यह पास किया कि प्रत्येक घर का एक आदमी सैनिक बनाया जाय। रेमप्लेसमेन्ट का नियम भी तोड़ दिया गया।

१७ दिसम्बर सन् १६०६ को मरते दम लियूपोल्ड ने कानून पर अपना हस्ताक्षर किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका भतीजा अलबर्ट गद्दी पर बैठा। अलबर्ट भी अपने चचा की भांति अपनी एक शक्तिशाली सेना रखना चाहता था।

कुछ समय पश्चात् बेल्जियम सरकार को यह बात मालूम हुई कि उसके देश पर शीघ्र ही आक्रमण होने वाला है। ५०,००० जर्मन सेना रातोंरात लीज नगर पर धावा बोलने वाली है।

लीज नगर के चारों ओर कुछ कुछ दूरी पर किले बने थे, जिनसे उसकी रक्षा होती थी। यदि लीज जर्मन के हाथ चला गया तो फिर जर्मन सेना के लिये ऐन्टवर्प ब्रूसेल्स आदि का लेना बिलकुल आसान था। इसलिये बेल्जियम के पार्लियामेन्ट का एक 'गुपचुप' अधिवेशन

हुआ जिसमें बेल्जियम के सभी आदमियों को सेना में काम करने के लिये कानून पास किया गया।

यह कानून सन् १९१३ में पास किया गया। बेल्जियम को अपनी सेना का संगठन तथा सुधार करने का समय भी नहीं मिला और अगस्त सन् १९१४ में युद्ध आरम्भ हो गया।

जर्मन सेना ने अपनी संधि तोड़ दी और लीज की ओर बढ़ी। बेल्जियम के राजा अलबर्ट ने भी अपनी अध्यक्षता में बेल्जियम सेना को लेकर जर्मन सेना के सामने जा डटा। जर्मन सेना किलों को बमों द्वारा चकनाचूर करती, घरों गावों को जलाती, माता पिता और बच्चों की हत्या करती आगे बढ़ी। अलबर्ट और सेना ने घोर संग्राम किया, बहुत से आदमी मारे गये। जर्मन सेना कहीं अधिक शक्तिशाली थी इसलिये वह बेल्जियम सेना को भगाती आगे बढ़ी और ब्रूसेल्स पर अधिकार जमाया। उसके बाद एन्टवर्प पर घेरा डाला। बेल्जियम सेना अंग्रेज़ सेना के साथ वाइसेर की ओर हट गई और वहां ट्रेन्चेज़ (खाई) खोद कर मुकाबला करने

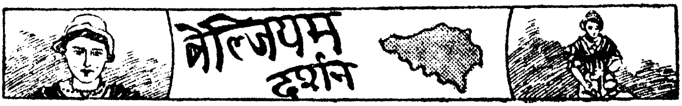
को डट गई। जर्मन सेना इंगलैंड के विपरीत तट तक पहुंचना चाहती थी।

अक्तूबर के मध्य तक जर्मन सेना ने वाइसेर के पश्चिमी भाग को छोड़ कर सारे बेल्जियम पर अधिकार जमा लिया। बेल्जियम सेना ने फ्रेंच तथा अंग्रेज़ सेना की सहायता से वाइसर प्रान्त की रक्षा की। उन्होंने वाइसर नदी और समुद्र का पानी फोड़ कर एक झील अपने सामने बना ली जिससे जर्मन सेना आगे न बढ़ सकी। अलबर्ट और उसकी स्त्री वहीं एक झोपड़े में ला पैने नामक गांव में समुद्र तट पर रहते थे राजा तथा रानी दोनों लड़ाई के मैदान डटे रहते थे।

जर्मन सेना ने जब आक्रमण किया तो कुछ नगरों तथा गाँवों को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। कारखानों को उन्होंने चकनाचूर कर डाला था। हज़ारों पेड़ों को उन्होंने काट कर गिरा दिया था। जो सामान उन्हें मिला उसको वे अपने देश भेजते चले गये। नगरों पर उन्होंने बड़े बड़े कर लगाये और जबरदस्ती रुपया वसूल किया। उन्होंने बेल्जियम की ऐसी बुरी दशा कर दी थी कि यदि सहायक संस्थाओं द्वारा भोजन न बांटा जाता तो लोग भूखों मर जाते।

ऐसी निर्दयता करने पर भी बल्जिय के निवासियों ने साहस नहीं छोड़ा था। इसमें ब्रूसेल्स के लार्ड मेअर एम० मैक्स तथा कार्डिनल मरसियर का नाम उल्लेखनीय है इन व्यक्तियों ने जर्मन अफसरों के सामने उनके मुख पर उनका विरोध किया था और कैदी बना कर जर्मनी भेज दिये गये थे।

बेल्जियम निवासी जर्मनों के अधिकार में रहना नहीं चाहते थे। इस लिये बहुत से लोग फ्रान्स, इँगलैंड हालैण्ड आदि देशों में भाग गये। बहुत से नवयुवक अपने सेना में सैनिक बनने के इच्छुक थे। हालैंड देश उनके देश से मिला था। किन्तु हालैण्ड तथा बेल्जियम की सीमा पर जर्मन सेना ने बिजली के तार की लाइन बना रखी थी जिससे कोई पार न कर सके साथ ही साथ जर्मन सैनिक घूम घूम कर पहरा देते रहते थे यदि कोई व्यक्ति लाइन को पार करने का प्रयत्न करता हुआ देखा जाता था तो वह गोली से मार दिया जाता था। इतना होने पर भी बेल्जियम के वीर युवकों ने लकड़ी की सीढ़ियाँ लेकर अथवा तार काट कर हालैण्ड को गये थे। और सेना में भर्ती होकर युद्ध किया था।



आखिरकार युद्ध का अन्त हुआ और ११ नवम्बर सन् १६१८ ई० को 'आर्मिस्टिस दिवस' मनाया गया। यह दिवस प्रत्येक वर्ष ११ नवम्बर को मनाया जाता है। जब कि सभी लोगों को दो मिनट तक लड़ाई में मारे गये सैनिकों की याद में शान्त तथा चुप रहना पड़ता है।

युद्ध के अन्त होने पर बेल्जियम की दशा बड़ी सोचनीय हो गई थी, उसके नगर, कारखाने, मशीनें, आदि सभी नष्ट भ्रष्ट हो गये थे। सड़कों, रेलों तारों आदि का चप्पा चप्पा बर्बाद कर दिया गया था। सारा का सारा देश उजाड़ दिखाई पड़ता था किन्तु जर्मनों के चले जाने के बाद ब्रूगेस, घेन्ट, ऐन्टवर्प और ब्रूसेल्स आदि नगरों में बड़ी चहल-पहल थी। लोग अपने राजा तथा रानी के शुभागम की खुशी में नाच, गाने और खेल तमाशों में व्यस्त थे।

बेल्जियम के निवासी शीघ्र ही अपने देश की बिगड़ी दशा को सुधारने में लग गये। यद्यपि जर्मनी ने बेल्जियम को हरजाना देने का बचन दिया था तो भी हर्जाना की पर्वाह न करते हुये बेल्जियम ने अपना काम आरम्भ कर दिया।

बेल्जियम निवासियों ने ऐसा प्रयत्न किया और इस प्रकार अपने देश की बिगड़ी दशा को सुधारा कि यदि आज वहाँ कोई देखने जावे तो उसे यह नहीं मालूम हो सकता कि वह देश कभी भी युद्ध द्वारा नष्ट किया गया था।

देश की दशा सुधारने में बहुत रुपया व्यय हुआ है। बेल्जियम में इस समय कर इतना अधिक है कि लगभग सभी वस्तुओं का मूल्य बढ़ गया है। मज़दूरों की मज़दूरी तथा किराया आदि पहिले से कहीं अधिक हो गया है खाने की वस्तुओं और कपड़ों का मूल्य भी बहुत बढ़ गया है। किन्तु बेल्जियम के निवासी इतने परिश्रमी होते हैं कि वे शीघ्र ही अपनी कठिनाइयों का दूर कर लेने का उपाय खोज निकालते हैं। आज वे उसी प्रकार सुख से अपने जीवन व्यतीत कर रहे हैं। जैसे वे पहिले किया करते थे। यदि हम वहां जाँय तो नागरिक लोग घरों के सामने काफ़ी तथा शराब पीते और गाना बजाना सुनते दिखाई पड़ेंगे। तटीय प्रदेश में युवा स्त्रियाँ तथा युवकगण टेनिश और गाल्फ खेलते मिलेंगे और छोटे बच्चे बालू में अपने खेल प्रसन्नता पूर्वक खेलते मिलेंगे।

* * *

बड़े दिन का त्योहार

इँगलैण्ड, जर्मनी और दूसरे देशों की भाँति बेल्जियम में बड़े दिन का त्योहार नहीं मनाया जाता। बेल्जियम में बड़े दिन के अवसर पर चर्चों में एक खास तरह के रीति-रिवाज तो अवश्य मनाये जाते हैं किन्तु वहाँ पर क्रस्मस वृक्ष बड़े दिन की भेंट आदि नहीं दिये जाते और न बड़े दिन के अवसर पर निमन्त्रण ही होते हैं।

प्राचीन काल में बेल्जियम में बहुत से त्योहार मनाये जाते थे, जिनके चिन्ह अब भी वहाँ के रीति-रिवाजों में पाये जाते हैं। ईसाई होने के पहले बेल्जियम देश मूर्तिपूजक था। उस समय वहाँ शीतकाल के मध्य में एक त्योहार मनाया जाता था। इसके सिवा और भी बहुत से त्योहार प्रचलित थे, जिनमें से बहुत से अब तक वैसे ही मनाये जाते हैं या उनको प्रतिमा अब भी रीति-रिवाजों में प्रचलित है।

इन रिवाजों में कुछ तो बड़े ही अद्भुत प्रतीत होते हैं। म्यूज़ की घाटी में वहाँ के निवासी अपने शीतकाल

के मध्य वाले त्योहार के निमन्त्रण के समय जंगली सुअर का मांस खाते थे। अब उसी की नकल में नामूर के निवासी निवास करते हैं और बड़े दिन के अवसर पर सुअर का भुना हुआ मांस खाते हैं। ब्रूसेल्स निवासी शाह बलूत के फल खाते हैं। यह प्राचीन जर्मनी की नकल है। यह लोग बलूत के फलों को आग में जला कर शुभ अशुभ की परीक्षा भी करते हैं। जैसे अगर किसी नये जोड़ की शादी होने को हुई तो दो बलूत के फल आग में डाले जाते हैं। यदि वे शान्ति पूर्वक जल गये तो शुभ है और यदि उनमें किसी प्रकार का फटने का शब्द हुआ या वे चिटक कर अलग हो गये तो अशुभ माना जाता है। इसी प्रकार यदि बड़े दिन की संध्या को चिराग अथवा लैम्प बुझ गया हो तो उससे यह परिणाम निकाला जाता है कि उस कमरे का बैठा हुआ कोई व्यक्ति शीघ्र ही मरने वाला है। इसी प्रकार नमक फर्श पर डाल दिया जाता है। यदि नमक पिघल गया तो यह भी मृत्यु का चिन्ह है कुछ स्थानों पर बुराइयों से बचने के लिये बड़े दिन के अवसर पर सारी रात चिराग जलाये जाते हैं। कहीं कहीं पर वे फल वाले पेड़ पर कुल्हाड़ी

से चोट की जाती है उनका विश्वास है कि चोट करने से दूसरे वर्ष उनमें फल लगेंगे।

इसी प्रकार बहुत से अंध विश्वास बेल्जियम में प्रचलित हैं जो बड़े दिन के उत्सव में सम्मिलित कर दिये गये हैं बेल्जियम के कुछ किसानों का विश्वास है कि जब बड़े दिन की रात को बारह बजते हैं तो उनके घर का सारा पानी शराब बन जाता है।

बेल्जियम के कुछ नगरों में यह रिवाज है कि गरीब लड़के बड़े दिन की संध्या को घर घर गाना गाते हुये भिक्षा माँगते हैं। उनका एक प्यारा गान इस प्रकार आरम्भ होता है:—

ब्लीडेन नाच.

ओ ब्लीडेन नाच : मशीहा इज़ जेबोरेन ? :

यह गान फ्लेमिश भाषा में है। इसका अर्थ यह है कि "ऐ पवित्र रात्रि, ऐ पवित्र रात्रि" मसीहा पैदा हुआ है।

अच्छे लड़के जिन्होंने सदैव प्रार्थना की है वे बड़े दिन की रात को अपनी तकियों के नीचे रोटी पाने की आशा करते हैं। उनका कहना है कि यह रोटी उन्हें

हजरत जिब्राईल देते हैं। कुछ का कहना है कि यह रोटी ईसा मसीह देते हैं। बुरे लड़कों को यह रोटी नहीं मिलती।

बेल्जियम के कुछ चर्चों में यह रिवाज है। कि एक चरनी बनाई जाती है। जिसमें चारों ओर मोमबत्ती जला दी जाती है। बीच में बालक यसू की मूर्ति रक्खी जाती है। यह संस्कार आधी रात के समय किया जाता है। बहुत से घरों में भी यह मनाया जाता है। इस संस्कार को बैतुलहम्स कहते हैं।

फ्लैन्डर्स में लोग एक दूसरे से बड़े दिन के अवसर पर मिलते हैं और एक दूसरे के लिये शुभ चिन्तना करते हैं। उच्च घराने के लोग अपने छोटे बच्चों को रिश्तेदारों के पास इनाम के लिये भेजते हैं।



नव-वर्षोत्सव

बेल्जियम में साल का प्रथम दिन बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। साल का अन्तिम दिवस ३१ दिसम्बर सेन्ट सील वेस्टर का दिन माना जाता है उस दिन जो बालक सब से अन्त में अपनी चारपाई से उठता है उसे सील वेस्टर कहते हैं और उसे अपने सुन्दर खिलौने अपने भाई बहनों को देना पड़ता है। घर की बड़ी लड़कियां जो उस दिन अपनी किसी आरम्भ किये हुये कार्य को समाप्त नहीं कर पातीं वे अपने को अभागिन समझती हैं। कुछ लोगों का विश्वास है कि युवा लड़कियां जो उस दिन की संध्या तक अपने कार्य नहीं समाप्त कर लेतीं उनकी शादी फिर एक साल तक नहीं हो सकती। इसलिये सभी अपने कामों को समाप्त करने का प्रयत्न करती हैं। और साल में आन्तिम रात्रि सुख चैन से व्यतीत की जाती है। घर के सभी प्राणी आधी रात तक गाना गाने और खेल तमाशे करते हुये जागते रहते हैं जब रात को बारह बजते हैं तो सभी एक दूसरे को चूमते हैं और एक वर्ष की शुभ कामना करते हैं।

बड़े बड़े नगरों में लोग अपने घरों में नये दिन का त्योहार नहीं मनाते ! वे लोग होटलों, काफी घरों में जाकर बारह बजे तक खेल तमाशों में लगे रहते हैं। उसके बाद सभी पेट भर कर शराब पीते हैं और फिर लगभग सवेरे तक शोर गुल मचा रहता है।

पहले नये दिन की आधी रात को सभी स्थानों पर बन्दूकों की आवाज़ की जाती थी किन्तु यह रिवाज अब बन्द हो गई है केवल लिमवर्ग में प्रेमी अपनी प्रेमिका के खिड़की के सामने जाकर बन्दूक छुड़ाता है। जितने अधिक बन्दूक के शब्द होंगे उतना ही अधिक प्रेमी का प्रेमिका के लिये प्रेम समझा जावेगा। प्रेमिका किसी बोतल में शराब भर कर अपना प्रेम दिखाने को बाहर रख देती है जिसे प्रेमी ढूँढ़ कर पीता है।

बेल्जियम के नागरिक नये दिन के अवसर पर अपने मित्रों से मिलने के लिये जाते हैं और उन्हें शुभ अवसर की बधाई देते हैं। लोगों को दिन भर इसी काम में लग जाता है। हमारे यहां की भांति जब दोस्त मिलने आते हैं तो उनका मिठाई आदि से सत्कार किया जाता है। चूंकि सभी लोग मित्रों से मिलने जाते हैं।

इसलिये लोगों की मेजें बुलाने वाले कार्डों से भर जाती हैं।

ऐन्टवर्प आदि कुछ नगरों में यह रिवाज है कि युवा स्त्री अथवा पुरुष एक दूसरे को जिसे वे जानते हैं नव वर्ष के अवसर पर चूम सकते हैं।

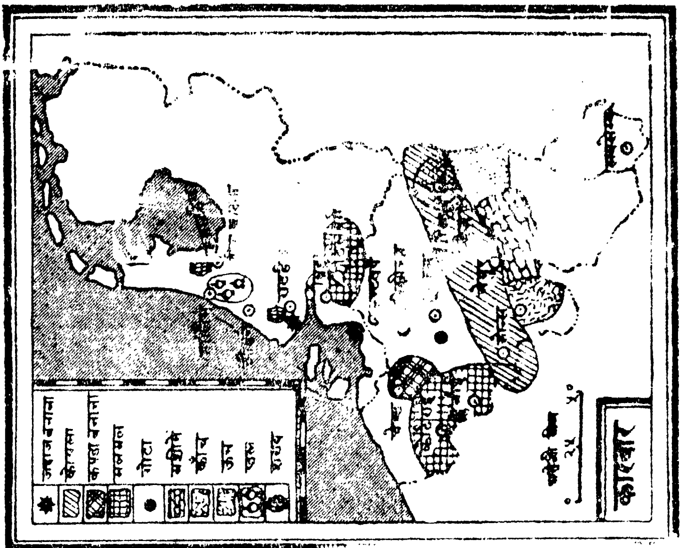
बेल्जियम के दक्षिणी भाग में यह रिवाज है कि जब किसी मित्र से मिलते हैं। तो नये साल का आशीर्वाद देने का पहले ही प्रयत्न करते हैं। लड़के तथा बच्चे नये दिन को बड़े सवेरे उठते हैं। और पिता-माता-भाई बहिन आदि को नये दिन का शुभ संदेश अचानक किसी जगह लिख कर देते हैं और उसके बदले इनाम आदि पाते हैं।

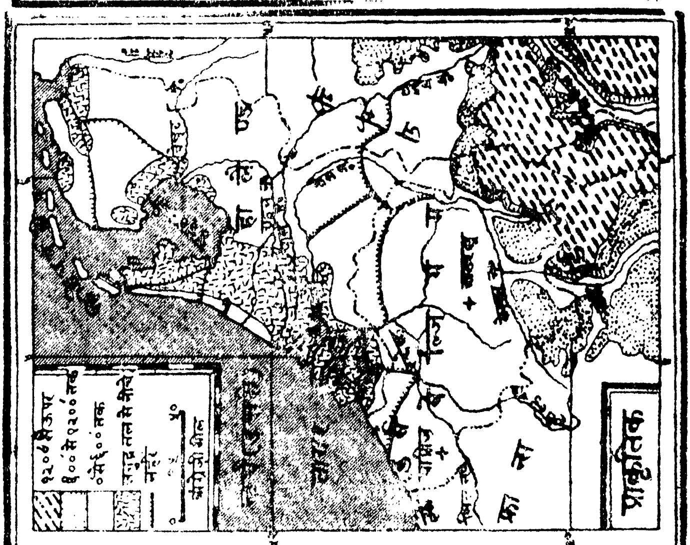
हमारे यहां होली के त्योहार की भांति नव वर्षोत्सव के समय केवल मित्र लोग ही नहीं मिलने आते वरन् दूसरे लोग भी मकान पर आते हैं और कुछ न कुछ भोजन अथवा इनाम चाहते हैं।

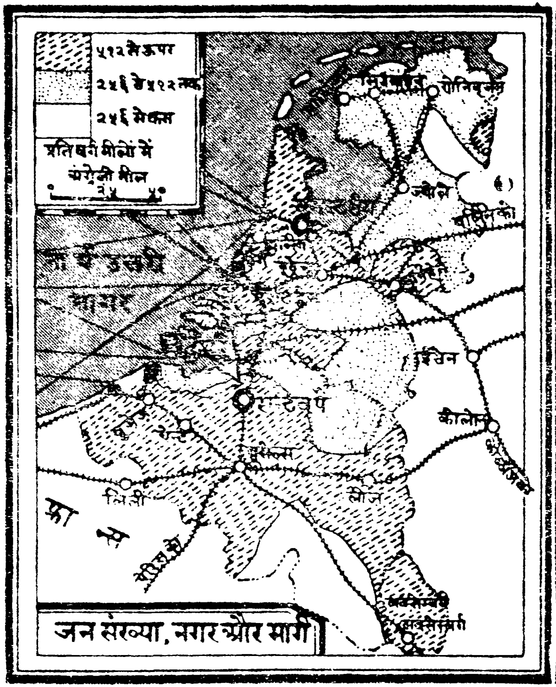
६ जनवरी को एपीफैनी के निमंत्रण का उत्साह मनाया जाता है। फ्लैन्डर्स में इसे बड़े नये दिन के नाम से पुकारते हैं। वहां के मज़दूर लोग इसको नये दिन

की भांति ही मनाते हैं। बेल्जियम के मज़दूर लोग सोमवार को छुट्टी मनाते हैं और कुछ काम नहीं करते। एपीफैनी के बाद वाला सोमवार लास्ट (खोया हुआ) सोमवार कहलाता है क्योंकि उस दिन कोई कुछ दिन काम नहीं करता। सारा दिन रुपया पैसा मांगने में व्यतीत किया जाता है। रात के समय लोग शराब खूब पीते हैं।

यद्यपि बेल्जियम के मज़दूर योरुप में सबसे अधिक परिश्रम शील गिने जाते हैं तो भी अन्ध विश्वास के कारण लास्ट सोमवार को काम करना अभाग्य समझा जाता है। इसलिये मजदूर लोग शराब बहुत मात्रा में पीते हैं और इसी के कारण उस दिन हिंसा के जुर्म भी बहुत किये जाते हैं।


कारबार

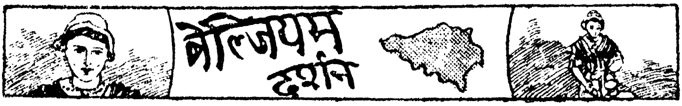

प्राकृतिक



जन संख्या, नगर और मार्ग



प्रधान नहरें, समुद्र के नीचे से सुखाये हुवे प्रदेश, कृषि और-चरागाह



जुलूस तथा तमाशे

बेल्जियम निवासी जुलूस तथा तमाशों के बड़े शौकीन हैं। नगरों में खेल तमाशे बहुत होते हैं और गाँवों में भी कम से कम साल में एक बार यह उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव प्राचीन काल से मनाए जाते हैं उस समय यह बड़े समारोह के साथ मनाये जाते थे। योद्धा तथा सूरमा लोग अपने अपने हथियारों के साथ सुसज्जित होकर घोड़ों पर निकलते थे। उच्च घराने की स्त्रियां सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण पहिन कर इनका अवलोकन करती थीं।

बेल्जियम में सन् १४६८ ई० में इसी प्रकार का तमाशा हुआ था। उस समय अँग्रेज़ राजकुमारी मारगरेट आफ यार्क ने बर्गन्डी के ड्यूक चार्ल्स बोल्ड के साथ ब्याह किया था। बर्गस के बाजार में एक बड़ा टोर्नामेन्ट किया गया, जिसमें बहुत से सूरमाओं ने भाग लिया। इस टोर्नामेन्ट का नाम "गोलडन वृक्ष का टोर्नामेन्ट" था। १६०७ ई० में इसी की याद में एक तमाशा किया गया। एक बेल्जियम युवती अँग्रेज राज-

कुमारी बनी और एक युवक चार्ल्स बोल्ड बना। तमाशा का सारा काम प्राचीन ढंग पर किया गया था। नौकर, सेना, कोर्ट के अफसर सभी लोग बनाये गये। यह तमाशा तीन दिन तक होता रहा और बेल्जियम के प्रत्येक भाग से हजारों की संख्या में लोग इस लीला को देखने के लिये आये थे।

साल में एक बार बर्गेस नगर में "होली ब्लड" (पवित्र लहू) का जलूस निकाला जाता है। यह जलूस दो मई के पश्चात वाले प्रथम सोमवार को निकाला जाता है। उसमें योरुप के प्रत्येक कैथलिक सनातनी आकर भाग लेते हैं। नगर के अन्दर एक छोटा सा चर्च है जिसमें कहा जाता है कि मसीह का खून बिल्लौरी ट्यूब के भीतर रक्खा है। यह उस चर्च में लगभग ७०० साल से रक्खा है। यह ट्यूब एक सुन्दर संदूक में रक्खा है जो हीरे जवाहिरात से जुड़ा हुआ है। इसी संदूक का जलूस सोमवार को निकाला जाता है। सड़कों और गलियों के मकानात खूब अच्छी प्रकार रौशन कर दिये जाते हैं। चर्चों के घंटे बजाये जाते हैं। गलियों, सड़कों तथा मकानों की छतों पर दर्शकों की भीड़ जमा

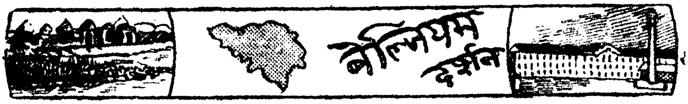
रहती है । खुशबूदार चिराग जलाये जाते हैं जिससे हवा खूशबूदार बन जाती है। गाने बजाने के सामान, सवारों का समूह, झंडे, फाँसी तथा स्मृतियों की चौकियाँ, भाट आदि सभी जुलूस में शामिल रहते हैं। विदेशी धर्म के यात्री लोग नंगे सिर रहते हैं औरतें श्वेत वस्त्र में रहती हैं, उनके सिर पर काँटों अथवा फूल के हारों का ताज होता है। पादरी तथा नेतागण आगे आगे धीमी चाल से चलते हैं जब पवित्र लहू की चौकी आती है तो उसके सामने सभी अपने सिर पृथ्वी की ओर झुका लेते हैं।

एन्टवर्प के समीप लीरे नगर में इसी प्रकार सेन्ट गोम्मारियस की यादगार में जुलूस निकाला जाता है। इस जुलूस में "पवित्र लहू" वाले जुलूस की भांति चौकियां रहती हैं। छोटे छोटे लड़कों को सेन्ट तथा महात्माओं का पार्ट करना पड़ता है। यह लड़के श्वेत, पीला, हरा, नीला, लाल आदि रंगों के वस्त्र पहिने रहते हैं। यह जलूस प्राचीन मन्दिरों तथा यादगारों में होकर जाता है। इसी प्रकार बेल्जियम के और दूसरे नगरों में भी धार्मिक जुलूस निकाले जाते हैं। एक बार एक

५० वर्षीय जोड़े की शादी हुई। उसकी खुशी में सेन्ट गोम्मारियस की सर्विस के पश्चात् जुलूस निकाला गया। जुलूस बड़े हाव-भाव के साथ निकाला गया था। और सभी लोग बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ते थे। सवारी के आगे गाने बजाने वाले गाना गाते तथा बाजे बजाते हुए चलते थे।

इसी प्रकार जब कोई स्कूल का विद्यार्थी अथवा खेलाड़ी कोई पुरस्कार पाता है तो उसकी प्रसन्नता दिखाने के लिये जुलूस निकाला जाता है।

बेल्जियम निवासी जुलूस, खेल तमाशों के इतने शौकीन होते हैं कि इनके सामने वे अपना सारा कष्ट भूल जाते हैं। स्पेन वालों ने यहाँ के निवासियों पर बड़ा जुल्म किया था, किन्तु वहाँ के निवासी अपने सभी कष्ट भूल जाते थे जब उनके लिये ऐसे खेल तमाशे का प्रबन्ध स्पैनी लोग कर देते थे। यहाँ के निवासी हँसमुख तथा प्रसन्नचित्त होने के कारण ही अपने कष्टों को सहन कर सकते हैं नहीं तो युद्ध आदि के कारण जो कष्ट उन पर हुये थे उसको वे सहन न कर सकते।



सेन्ट एवर मेअरे की अमर कहानी

एक बार सेंट एवर मेअरे हेस्वाए प्रदेश में तीर्थ यात्रा के लिये गया। यह स्थान म्यूज नदी के किनारे है। साधु के साथ में उसके कई एक मित्र भी थे। चलते चलते वे एक बन में पहुँचे। वहां उन्हें अँधेरा हो गया। मार्ग भूल जाने के भय से वे एक गाँव की ओर रात बिताने के लिये गये। यह गाँव हक्कू नामक डाकू का था। यात्री लोग डाकू के द्वार पर ही पधारे। दर्वाजा खटखटाने पर हक्कू की स्त्री ने द्वार खोला और उसने बड़े हर्ष के साथ उनका स्वागत किया। स्त्री ने उनसे बतलाया कि उसका पति एक डाकू है यद्यपि उस समय वह घर से कहीं बाहर गया था तो भी उनका वहां अधिक समय तक ठहरना खतरे से खाली न था। इसलिये यात्री लोग बड़े तड़के उठकर बन की ओर चले गये और वे वृत्तों के बीच एक झरने के किनारे पड़ कर सो रहे।

यात्रियों के जाते ही हक्कू अपने घर वापस आया। वह रात भर डाका मारने की खोज में घूम रहा था। जब

उसने अजनबी लोगों के आने का समाचार पाया तो बड़े गुस्से में आकर उनकी तलाश में भागा । जङ्गल में पहुँच कर उसने उन यात्रियों को सुख की नींद सोते पाया । उसने सभों को मार डाला और उनके कपड़े चीड़ फाड़ कर मृतक शरीरों को वहीं छोड़ चलता बना ।

कुछ समय के पश्चात् कुछ शिकारी उधर से गुजरे । उन्होंने मृतक शरीरों को पड़ा देख उन्हें एक कब्र में गाड़ दिया किन्तु सेन्ट एवरमेअरे का चमकीला चेहरा देख उसे एक दूसरी कब्र खोद कर उसमें गाड़ दिया ।

कुछ काल के पश्चात् जंगल काट कर वहीं रुस्सन नामक गांव बसाया गया । उस गांव के चर्च के प्रथम पादरी ने सेन्ट एवर मेअरे की कब्र का पता लगाया और उनकी हड्डियों को चर्च में लाकर रक्खा । अब हड्डियां एक चैपल में रक्खी हैं । यह चैपल बलूत के वृक्षों के बीच उसी स्थान पर है जहां हक्कू ने उन्हें मारा था । बगल ही में एक सोता बहता है । कहा जाता है कि इस सोते का पानी शीतज्वर को अच्छा करता है । चैपेल (गिरजा) में हक्कू के कतल करने का चित्र

बना है। वहां वार्जित मैरी और सेन्ट एवरमेअरे की भी मूर्तियां बनी हुई हैं।

मे डे (मई दिवस) के अवसर पर रुस्सन गांव से चैपेल को एक जलूस प्रति वर्ष जाता है, जिसमें साधू मेअरे के कतल की लीला की जाती है। पहले दो आदमी चर्च के बाहर कसे हुये कपड़े पहिने और वृक्ष-लता से अपने शरीर को ढके बाहर आते हैं। उनके सिर पर लम्बी नुकीली टोपियां रहती हैं और हाथों में लम्बी लाठियां रहती हैं। यह लोग अपने मुँह बनाकर और लाठियां दिखाकर लोगों को भयभीत करने का प्रयत्न करते हैं। ७ व्यक्ति साधु मेअरे और उसके मित्रों का भेष धारण करते हैं। सेन्ट मेअरे के कमर की पेटी में एक माला तथा पानी की बोतल लटकती रहती है और सिर पर गोल टोप रहता है। इनके पीछे लगभग ५० सवार रहते हैं जो हक्कू डाकू तथा उसके साथियों का काम करते हैं।

यह जलूस चैपेल को जाता है। सर्विस के पश्चात् सभी लोग सोते की तरफ भागते हैं। सोते के समीप तीर्थ यात्री लोग एक गोले में खड़े होते हैं और एक

देहाती गाने द्वारा ईश्वर की बन्दना करते हैं। जब साधु लोग प्रार्थना करते रहते हैं तो हक्कू के साथी इधर उधर घोड़ों पर घूमते हैं, किन्तु प्रार्थना के समाप्त होते ही वे आकर उन्हें घेर लेते हैं और कई बार उनके चारों ओर घूम घूम कर चक्कर लगाते हैं। साधु हक्कू से दया की प्रार्थना करते हैं और वह उन्हें गाली देता है। आखिरकार हक्को अधीर होकर अपनी तलवार निकालता है और यात्रियों की ओर यह चिल्लाता हुआ बढ़ता है कि वह उन्हें कत्ल कर डालेगा।

इस समय दर्शकों से रोने की आशा प्रगट की जाती है किन्तु अचानक सबसे छोटा साधू अपनी जान लेकर भागता है। हक्कू और उसके साथी उसके पकड़ने को पेड़ों की ओर बढ़ते हैं और कुछ समय तक छिपने ढूंढने (आँख मुदौला) का सा खेल होता है। इसी बीच दर्शकगण तथा बच्चे लोग तालियां बजाते, हँसते और शोर मचाते हैं। हक्कू साधू को मारने के लिये एक पिस्तौल से गोली चलाता है किन्तु उसका पहला निशाना खाली जाता है जिसपर दर्शक हँसते हैं। हक्कू फिर निशाना लगाता है, साधु पृथ्वी पर गिर पड़ता है और

मर जाता है। एक डाकू उसे अपने घोड़े पर लाद कर चरागाह की ओर ले आता है।

इसी बीच दूसरे साधु निराश होकर घास पर लेट जाते हैं। हक्कू और उसके साथी उन्हें मारने जाते हैं, किन्तु इसी बीच सभी पात्र प्यासे हो जाते हैं। इसलिये सेन्ट मेअरे उसके साथी और डाकू लोग जाकर शराब पीने लगते हैं। वे पेट भर कर शराब पीते हैं। इस प्रकार उनकी लीला समाप्त होती है।

कारनिवाल

फ्लैन्डर्स में लेन्ट के पहले वाला सप्ताह "डेविल्स वीक" (शैतान का सप्ताह) कहलाता है। इस सप्ताह में एडनेसडे (बुद्ध) के पहले वाले रविवार, सोमवार और मंगलवार को कारनिवाल मनाया जाता है। कारनिवाल शब्द लैटिन भाषा से निकाला गया है जिसके अर्थ मांस से अलग रहने के होते हैं। लेन्ट सप्ताह में कट्टर कैथलिक लोग मांस नहीं खाते और अपने को दुनियावी कार्यों से अलग रखने का प्रयत्न करते हैं। घेन्ट में उस सोमवार को बेवकूफों का सोमवार कहते हैं और समस्त बेल्जियम में उस मंगल को फैट ट्यूज़ डे (मोटा मङ्गल) कहते हैं। यह दिन मोटा इसलिये कहलाता है कि इस दिन लोग जो कुछ भी खाना पीना चाहते हैं उपवास करने के पहले भर पेट खाते पीते हैं। इंगलैण्ड में यह दिवस शोव ट्यूज़ डे कहलाता है।

कारनिवाल वाले सप्ताह के दिनों में लोग सुन्दर भड़कीले वस्त्र धारण करके सड़कों तथा गलियों में घूमने निकलते हैं। कभी कभी लोग अपने चेहरे पर

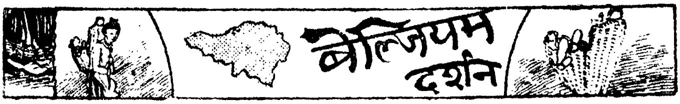
पर्दे डाले रहते हैं। इन दिनों लोग बहुधा देहाती भेष में रहते हैं। वे गाते बजाते तथा शोर मचाते रहते हैं और अपने को हर प्रकार बेवकूफ बनाने का प्रयत्न करते हैं। इन दिनों दूकानों पर रंगीन कागज़ों के टुकड़े बिका करते हैं, जिन्हें लोग खरीद कर परिचित अथवा अपरिचित सभी लोगों पर फेंकते हैं। लड़के इन कागज़ों से अपने सारे शरीर को इस प्रकार ढके रहते हैं कि उनके लिये घूमना कठिन हो जाता है। नाक, डाढ़ी, बाल, मुँह आदि वस्तुएँ कागज़ों की बनी होती हैं। लोग उन्हें न पहचाने जाने के ध्यान से धारण करते हैं और पास जाते हुये व्यक्ति के ऊपर कागज़ फेंकते हैं। कुछ कहते भी हैं और फिर भीड़ के अन्दर लुप्त हो जाते हैं। इन दिनों सड़कों के फर्श ऐसे कागज़ के टुकड़ों से भरे रहते हैं।

कारनिवाल जलूस भी बेल्जियम में निकाला जाता है। इस जुलूस में मोम के बने हुये राक्षस निकाले जाते हैं। इन सब राक्षसों के नाम रखे जाते हैं। ब्रूसेल्स के राक्षस का नाम ओभ्मेगन है। इसी प्रकार गोलियथ, लेंज मैन आदि राक्षस होते हैं। कारनिवाल के समय गरीबों

के लिये रुपया पैसा इकट्ठा किया जाता है और लोग छोटे छोटे संदूक लिये इधर उधर सबसे चन्दा लेते फिरते हैं। सभी लोग कुछ न कुछ इन संदूकों में डालते हैं।

कारनिवाल जुलूसों का निकलना धीरे धीरे बन्द हो रहा है। कारनिवाल के समय में अधिकांश सराएँ खुली रहती हैं। जहां पर नाच-गाने और खेल तमाशे रात भर हुआ करते हैं।

लेन्ट का चौथा दिन 'मि-केर्मे' कहलाता है। उस दिन जुलूस निकाला जाता है, जिसमें मिकेर्मे का काउन्ट निकलता है। वह लड़कों को भेंट देता है। एक और दूसरा काउन्ट (कुलीन जन) निकलता है। वह अपनी सवारी पर अखरोट का बोरा लिये रहता है और अखरोटों को फेंकता हुआ चलता है। कहा जाता है कि जो लोग इनको अपने दाँतों से तोड़ डालते हैं उनके दाँतों की पीड़ा अच्छी हो जाती है।



बच्चों के शीत काल के त्योहार

११ नवम्बर बेल्जियम में सेन्ट का दिन माना जाता है। ११ नवम्बर की संध्या बेल्जियम के बालकों के लिये बड़ी शुभ मानी जाती है।

लड़कों को उनके माता पिता कमरे के कोने में दीवार की ओर मुँह करके खड़ा कर देते हैं और उन्हें कुछ बोलने अथवा पीछे देखने को मना कर देते हैं। अगर लड़के पीछे घूम कर देखते अथवा प्रश्न करने लगते हैं तो कुछ नहीं होता और यदि वे खामोश रहते हैं तो उनके पीछे अखरोट सेब आदि फलों की वर्षा होती है और वे उसे बड़ी प्रसन्नता के साथ खाते हैं। बालकों को यह बतलाया जाता है कि ये फल सेन्ट मार्टिन द्वारा वर्षाये गये हैं।

सेन्ट मार्टिन दिवस की संध्या को पिता अथवा बड़ा भाई बच्चों के कमरे में साधु रूप धारण करके जाता है और उनसे पूछता है कि तुम अच्छे बालक रहे हो अथवा बुरे। यदि उसे अच्छे रहने का उत्तर मिलता है। तो वह बच्चों को मिठाइयां और फल आदि देता है

और यदि बुरे होने को कहा जाता है तो वह कमरे में एक कोड़ा फेंक कर चला जाता है।

मैलाइन्स नगर में गरीब लड़के सेन्ट मार्टिन दिवस के दिन एक जुलूस बना कर नगर में निकलते हैं। जिसमें एक लड़का सेन्ट मार्टिन बना रहता है। उसके पास एक टोकरी रहती है। ये बालक जिस किसी के द्वार पर जाकर खट खटाते हैं उसे कुछ फल अथवा पैसा अवश्य टोकरी में डालना पड़ता है। कुछ स्थानों में बालक कागज़ की लालटेनें बनाकर जला कर जुलूस निकालते हैं। और सेब तथा अखरोट माँगते फिरते हैं सेन्ट मार्टिन दिवस के दिन "गाउफ़फरेस" (सेन्ट मार्टिन की रोटी) नाम की रोटी खाई जाती है।

भारतवर्ष की भांति बेल्जियम में सेन्ट मार्टिन दिवस पर होली जलाई जाती है। सेन्ट मार्टिन दिवस के एक महीने के पश्चात् ६ दिसम्बर को सेन्ट निकोलस का दिवस होता है। कहा जाता है कि ६ दिसम्बर की रात को सेन्ट निकोलस गधे या श्वेत घोड़े पर सवार होकर आकाश में घरों तथा खेतों के ऊपर होकर जाता है वह एक बड़ी टोकरी में खिलौने, फल और

मिठाइयां भरे रहता है। वह चिमनी द्वारा ये वस्तुएँ नीचे बच्चों के लिये गिरा देता है और यदि बच्चे बुरे हुये तो वह केवल कोड़ा ही गिराता है। बचे चिमनी के नीचे सोते हैं और सोते समय अपने जूतों या टोकरी में घास चारा भर कर रख लेते हैं जिससे सेन्ट निकोलस का घोड़ा उसे खावे और सेन्ट निकोलस प्रसन्न होकर उन्हें फल तथा मिठाइयां आदि दे।

सोते समय बालक सेन्ट निकोलस के लिये गाना भी गाते हैं। उनके गानों में से एक गाने की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं :—

"सिन्टे निकलेस,
        नोबुल सिन्टे निकलेस !
वेरपीट इन भाई स्चोएन्टजेन
        एन अपील्टजेन आफईन लिनोएन जेन !"

इसका भावार्थ यह है कि वे अच्छे साधु निकोलस दया करके मेरे छोटे जूते में एक छोटा सेब अथवा नीबू डाल दें।

दूसरे दिन बड़े सवेरे ही बालक उठते हैं और

तुहवे की तलाश करते हैं। सेन्ट निकोलस अच्छे बालकों को सुन्दर खिलौने, अच्छी मिठाइयां और फल दे जाता है और उसका घोड़ा घास खा जाता है किन्तु बुरे लड़कों की घास पड़ी रहती है और उनके जूतों के समीप एक कोड़ा पड़ा रहता है। भेंट के बीच में अदरख की एक रोटी भी होती है।

निकोलस दिवस से लगभग १५ दिन के बाद २१ दिसम्बर को टेन्स टामस दिवस मनाया जाता है। उस दिन लड़के अपने माता पिता को किसी प्रकार धोका देकर घर के बाहर करने का प्रयत्न करते हैं। उनके बाहर हो जाने पर लड़के घर के द्वार पर ताला लगा देते हैं और जब उनके माता पिता धोके को समझ कर घर की ओर आते हैं तो बच्चे टामस दिवस कह कर हँसने लगते हैं। जब तक माता पिता बच्चों को कुछ मिठाई अथवा दूसरी वस्तुएँ भेंट देनी स्वीकार नहीं कर लेते तब तक द्वार नहीं खोला जाता। बच्चों के लिये यह एक बड़े मज़ाक का दिन होता है।

इसके एक सप्ताह बाद "अल्लर किन्डरेनडैग (बच्चों का दिन) मनाया जाता है। यह उस दिन की

याद में मनाया जाता है जिस दिन हिरोद ने बच्चों की हत्या की थी। इस दिन बच्चे अपने माता पिता के कपड़े पहिनते हैं और उनके स्थान ग्रहण करते हैं। वे घर के मालिक उस दिन के लिये बन जाते हैं और मनमानी अपनी आज्ञा का प्रतिपालन नौकरों से कराते हैं। गरीब लड़के अपने बड़ों के कपड़े पहिनकर घर घर भीक माँगते हैं, वे अपने को छोटे माता–पिता कहते हैं।

इस प्रकार बेल्जियम में छोटे बच्चे जाड़े में अपने त्योहार स्वतंत्रता पूर्वक मनाते और भेंटें लेते हैं।

देश दर्शन

बेल्जियम के खेल कूद

बेल्जियम में कई प्रकार के खेल होते हैं किन्तु सब से प्रधान खेल धनुर्विद्या (बाण चलाना) का है। प्रत्येक गाँव अथवा नगर में आर्चरी क्लब (बाण चलाने वाली संस्थाएँ) होती हैं। गाँव के बाहर घास के मैदान में एक बड़ा ऊँचा लकड़ी का लट्ठा गड़ा रहता है। लट्ठे के ऊपरी सिरे के समीप उसमें पतले डंडे बँधे रहते हैं। हैं इन्हीं डन्डों और लट्ठों में भी ऊपर की ओर कुछ खूँटियाँ गाड़ी रहती हैं। लट्ठे की सबसे ऊपरी खूंटी सबसे बड़ी होती है। इन खूंटियों में नीले रंग के चिथड़े लपेटे रहते हैं। इनका नाम पिजन (कबूतर) होता है। इन्हीं को लोग अपने बाणों से निशाना लगाते हैं। जब कोई अचूक निशाना लगता है और कबूतर नीचे आकर गिरता है तो दर्शक लोग तालियाँ बजाने तथा प्रसन्नता प्रगट करते हैं।

धनुर्विद्या के सेन्ट सेबस्चियन माने जाते हैं। यह खेल बेल्जियम का राष्ट्रीय खेल माना जाता है और वहां प्राचीन काल से ही प्रचलित है। ब्राबन्ट कीअर्चर्स

की संस्था तथा सेन्ट मेव्रस्चियन की संस्था बहुत प्राचीन है।

कुछ संस्थाएँ धनुषधारियों की ऐसी हैं जो निशाने को उलटा धनुष चला कर भेद करते हैं। इस विद्या के संस्थापक सेन्ट जार्ज माने जाते हैं। ब्रूगस के सेन्ट जार्ज माने जाते हैं। ब्रूगस के सेन्ट जार्ज नामक संस्था का एक त्योहार बड़ा अद्‌भुत है। यह फरवरी में मनाया जाता है। और इसे हैम का त्योहार कहते हैं। एक बड़े कमरे में प्रत्येक भांति का भोजन मेजों में सजा कर रख दिये जाते हैं। प्रत्क्रेक भोजन का नाम लिख कर तश्त-रियों के बीच बीच में रख दिया जाता है। जो मनुष्य जिस निशाने को मारता है वह वही भोजन करता है। सभी लोग एक के बाद दूसरे निशाना लगाते तथा भोजन करते हैं किन्तु इसमें एक बात बड़े मजे की यह होती है कि यदि कोई दूसरा व्यक्ति भी उसी निशाने को भेद करता है जिसे पहले किसी ने भेद कर लिया है तो पहले वाले को भोजन की थाली दूसरे वाले को छोड़ कर उठ जाना पड़ेगा।

बोट चलाने का खेल भी बेल्जियम में होता है।

घेन्ट नगर में इसका रिवाज बहुत है। कुछ साल हुये घेन्ट के बोट चलाने वाले क्लब ने हेन ली के बड़े इनाम वाले कटोरे को जीता था। घेन्ट के चतुर मल्लाहों ने अँग्रेज़ मल्लाहों को हरा दिया था।

लड़कों का प्रधान खेल घर का गेंद है और लड़कियों के स्कूल का प्रधान 'कैम्प रुईने' है। इस खेल में खिलाड़ी लड़कियां दो भाग में विभाजित हो जाती हैं। गेंद ऊपर को उछाल दी जाती है दोनों दल एक दूसरे को गेंद पकड़ने से रोकते हैं, जो खेलाड़ी लड़की रोकी जाती है वह शीघ्र ही विरोधी दल की ओर हो जाती है। इस प्रकार जब तक किसी एक दल का अन्त नहीं होता खेल होता रहता है।

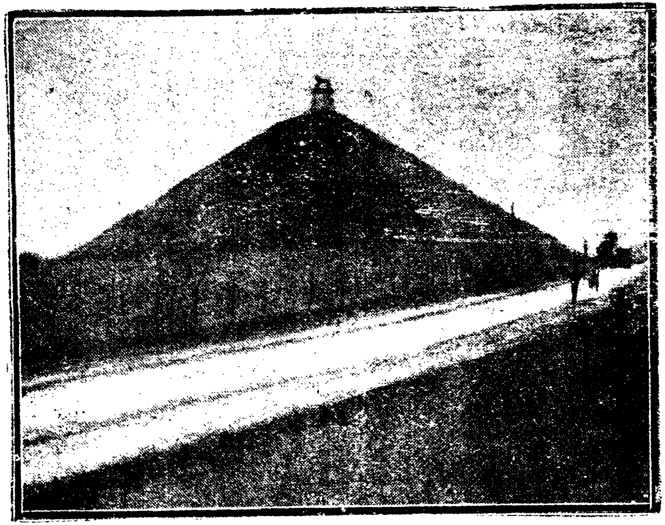
बेल्जियम के मज़दूर लोग 'ज्यूडे वाले' नामक खेल खेलते हैं। यह खेल उनके बीच प्रधान माना जाता है। पांच पांच खिलाड़ी दो ओर बँट जाते हैं। कोर्ट को विभाजित करने वाली रेखा पर गेंद उछाली जाती है और 'वाली वाल' की भाँति गेंद को हाथ द्वारा ऊपर रखने का प्रयत्न किया जाता है। वह ज़मीन पर गिरने नहीं पाती। नियत रेखा के बाहर जाकर गेंद गिरने पर

हार का प्वाइन्ट गिना जाता है। सब से कम प्वाइन्ट रखने वाले की जीत होती है। फुटबाल, क्रिकेट और गोल्फ आदि खेल कम खेले जाते हैं।

★ ★ ★



बेल्जियम का प्रसिद्ध क्रीड़ा-स्थल ब्लेंकिनबर्ग। यहां समुद्र तट पर सैकड़ों स्नान करने वाले और खेलने वाले लोग इकट्ठे होते हैं।



वाटरलू नगर का प्रसिद्ध सिंह-स्मारक १८१५ की विजय के उपलक्ष में मित्र राष्ट्रों ने २०० फुट ऊँचे टीले पर वाटरलू नगर में एक सिंह मूर्ति बनवाई थी।



बेलजियम की राजधानी ब्रूसेल्स नगर का राजभवन

देश दर्शन

भाषा

बेल्जियम में तीन प्रकार की भाषा बोली जाती है। ये भाषायें फ्लेमी, वालून, और फ्रांसीसी हैं। फ्लेमी भाषा फ्लैन्डर्स में बोली जाती है, जिसमें ऐन्टवर्प, लिम्बर्ग और ब्राबैण्ट के ज़िले सम्मिलित हैं। लीज, म्यूज़ की घाटी, लक्सेमबर्ग और पश्चिमी जिलों में वालून भाषा बोली जाती है। फ्रान्सीसी भाषा सारे बेल्जियम में बोली जाती है। कुछ लोग ऐसे हैं जो केवल फलेमी बोलते हैं, कुछ केवल वालून और कुछ केवल फ्रान्सीसी बोलते हैं, किन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो तीनों भाषा का प्रयोग करते हैं।

बेल्जियम के अधिकांश लोगों की भाषा फ्लेमी है तो भी बेल्जियम की अधिकतर पुस्तकें, पत्रिकायें और दैनिक पत्र फ्रान्सीसी भाषा में निकलते हैं। बेल्जियम के सभी पढ़े लिखे लोग फ्रान्सीसी भाषा लिख पढ़ तथा बोल सकते हैं। फ्लेमी भाषा में भी बहुत सी अच्छी अच्छी पुस्तकें हैं, जिसका अनुवाद अँग्रेजी में किया गया है।

यद्यपि बेल्जियम निवासी फ्रान्सीसी भाषा का ज्ञान भली भांति रखते हैं तो भी वे उसका उच्चारण अपनी

भाषा के अनुसार करते हैं। पूर्वी फ्लैण्डर्स में सबसे खराब और वाइमस में सबसे अच्छी फ्रान्सीसी भाषा बोली जाती है।

फ्लेमी तथा डच भाषा मिलती जुलती है। इन दोनों भाषाओं का उद्गम एक ही है, किन्तु इन दोनों भाषाओं के उच्चारण तथा स्वरों में बड़ा अन्तर पड़ जाता है। बेल्जियम के यात्री के लिये यह बात इसी लिये आवश्यक हो जाती है कि वह फ्रान्सीसी भाषा भली प्रकार जानता हो।

मानीटर नामक गज़ट में राजकीय घोषणायें फ्लेमिश तथा फ्रेंच दोनों भाषाओं में की जाती हैं। रेलवे के टिकट भी दोनों भाषाओं में छपते हैं। बेल्जियम की पार्लियामेन्ट यद्यपि आमतौर पर भाषण फ्रान्सीसी भाषा में होते हैं, तो भी सदस्यों को अधिकार है कि वे फ्लेमी भाषा बोल सकें।

वालून भाषा फ्रान्सीसी भाषा का बहुत प्राचीन फार्म है। क्रिसमस (बड़ा दिन) को फ्लेमी भाषा में केर्स्टडाग, फ्रान्सीसी भाषा में नोएल और वालून भाषा में नोवी कहते हैं।